Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-50
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 27 फरवरी से 05 मार्च 2019 तक
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी से फाल्गुन त्रयोदशी सप्तमी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

आंतक पर अब.... पृष्ठ- 3

बुलेटप्रूफ जैकेट... पृष्ठ- 4

परशुराम भगवान.... पृष्ठ- 5

अग्निशलाका पुरुष.... पृष्ठ- 8

अलगाववादियों पर और.... पृष्ठ- 12

- भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित होना चाहिए था असम उच्च न्यायालय
- राफेल चौकीदार की ईमानदारी पर सन्देह नहीं सर्वोच्च न्यायालय
- अपनी भाषा और संस्कृति का विरोध क्यों?
- हिन्दुओं का प्रतिशत लगातार घटता जा रहा है!
- इस्लामिक कट्टरपंथ को जड़ से खत्म करने की जरूरत

पाकिस्तानी कलाकारों पर भारत में लगाया जाए सरकारी प्रतिबंध

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने की मांग

● संवाददाता ●

ऑल इंडिया सिने वर्कर्स एसोसिएशन ने फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रहे पाकिस्थानी ऐक्ट्रर्स और आर्टिस्टों को पूरी तरह से बैन करने की धोषणा का स्वागत करते हुए अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सरकार से मांग की है कि फिल्मों के साथ किसी भी भारतीय कार्यक्रमों में पाकिस्तान के कलाकारों को पूर्णतः शेष पृष्ठ 10 पर

कुंभ मेले में दिख रहा हिन्दू आस्था का बृहद परिदृश्य

कुम्भ मेला विश्व का सबसे बड़ा समागम है–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

यूपी के प्रयागराज में १५ जनवरी से शुरू हुए कुंभ मेला–२०१६ में अब तक कई करोड़ तीर्थयात्रियों ने आस्था की डुबकी लगा ली है। इसके अलावा हर रोज करीब २० लाख तीर्थयात्री यहां पहुंच रहे हैं। कुंभ मेले में दस लाख से अधिक विदेशी पर्यटकों का अब तक पहुंचने का अनुमान है। केंद्र सरकार के अथक प्रयास के पश्चात यूनेस्को ने कुंभ को मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की सूची में शामिल किया है। इसके अलावा इस बार मेले में एक खास बात यह है कि यहां

४५० वर्षों के बाद पहली बार भक्तों को अक्षय वट और सरस्वती कूप में प्रार्थना करने का अवसर मिला। अभी तक अक्षय वट तक आम लोगों तक पहुंचने की इजाजत नहीं थी। इस अर्द्धप्रयागराज में कुंभ मेले के लिए दुनिया की सबसे बड़ी टेंट का शहर तैयार किया गया है। यहां के कई टेंट में आलीशान सूईट से लेकर धर्मशालाएं तक बनाई गई हैं। ये टेंट सिटी इतनी विशाल है कि इसे पैदल पूरा घूमना लोगों को काफी भा रहा है। यहां संगम तट पर बनी टेंट सिटी इतना मनोरम होता है, जो आपको कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। उल्लेखनीय है कि ये पहला मौका है जब कुंभ में १४ अखाड़ों ने शिरकत किया। कुंभ के दौरान इनकी भव्य पेश्वाई निकल चुकी है। ये अखाड़े, साधू–संत और महंत कुंभ का प्रमुख आकर्षण बने। प्रयागराज कुंभ में पहली बार किन्नर अखाड़ा भी शामिल हुआ। लोगों ने किन्नर अखाड़े की पेश्वाई को देखा। कुंभ में किन्नर अखाड़े को शामिल करने को लेकर काफी हंगामा और विरोध भी किया था। बावजूद शेष पृष्ठ 10 पर

श्रीमद्भगवत्गीता

पं. अविनाश पाण्डेय

कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था वह श्री भगवद्गीता के नाम से प्रसिद्ध है। यह महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। गीता में १८ अध्याय और ७२० श्लोक हैं जैसा गीत के शंकर भाष्य में कहा है–

तं धर्म भगवता यथोपदिष्ट वेद व्यासः।

सर्वज्ञोभगवान गीताख्यैः सप्तभिः श्लोक शतैरूप निबंध।।

ज्ञात होता है कि लगभग २०वीं सदी के शुरू में गीता प्रेस (१९२५) के सामने गीता का वही पाठ था जो आज हमें उपलब्ध है। २०वीं सदी के लगभग भीष्म पर्व का जावा की भाषा में एक अनुवाद हुआ था। उनके अनेक मूल श्लोक भी सुरक्षित हैं। गीता की गणना 'प्रस्थानत्रायी' में की जाती है जिसमें उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र भी सम्मिलित हैं। अतएव भारतीय परंपरा के अनुसार गीता का स्थान वही है, जो उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रों का है।

गीता के माहात्म्य में उपनिषदों को गौ और गीता को उसका दुग्ध कहा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि उपनिषदों की जो आध्यात्म विद्या थी, उसको गीता सर्वांश में स्वीकार करती है।

उपनिषदों की अनेक विद्याएँ गीता में है। जैसे संसार के स्वरूप के संबंध में अश्वत्थ विद्या, अनादि अजन्मा ब्रह्मा के विषय में अव्यय पुरुष विद्या, परा प्रकृति या जीव के विषय में अक्षर पुरुष विद्या और अपरा प्रकृति या भौतिक जगत के विषय में क्षर–पुरुष विद्या। इस प्रकार वेदों के ब्रह्मावाद और उपनिषदों के आध्यात्म, इन की विशिष्ट सामग्री गीता में संनिविष्ट है। उसे ही पुष्पिका के शब्दों में ब्रह्मा विद्या कहा गया है।

गीता में 'ब्रह्मविद्या' का आशय निवृत्तिपरक ज्ञान मार्ग से है। जिसके साथ निवृत्तिमार्गी जीवन पद्धति जुड़ी हुई है उसे सांख्यमत कहा जाता है। लेकिन गीता उपनिषदों के मोह से आगे बढ़कर उस युग की देन है, जब एक नया दर्शन जन्म ले रहा था जो गृहस्थों के प्रवृत्ति धुव को निवृत्तिमार्ग के समकक्ष और उतना ही फलदायक मानता था। इसी का संकेत देने वाला गीता की पुष्पिका में योग शास्त्र शब्द हैं। यहाँ 'योग शास्त्रों' का अभिप्राय निःसंदेह कर्मयोग से है। गीता में योग की दो परिभाषाएँ पाई जाती हैं। एक निवृत्ति मार्ग की दृष्टि से जिसमें 'समत्यं योग उच्यते' कहा गया है, अर्थात गुणों के वैषम्य में साम्यभाव रखना ही योग है। योग की दूसरी परिभाषा है 'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात कर्मों में लगे रहने पर भी ऐसे उपाय से कर्म करना कि वह बन्धन का कारण न हो और कर्म करने वाला उसी असंग या निर्लेप स्थिति में अपने को रख सके जो ज्ञान मार्गियों को मिलती है। इसी युक्ति का नाम बुद्धियोग है और यही गीता के योग का सार है।

गीता के दूसरे अध्याय में जो 'तस्य प्रजा प्रतिष्ठिता' की धनु पाई जाती है, उसका अभिप्राय निर्लेप कर्म की क्षमताबली बुद्धि से ही है। यह कर्म के सन्यास द्वारा वैराग्य प्राप्त करने की स्थिति नहीं थी बल्कि कर्म करते हुए पदे–पदे मन वैराग्य वाली स्थिति में ढालने की युक्ति थी। यही गीता का कर्मयोग है। जैसे महाभारत के अनेक स्थलों में वैसे ही गीता में भी सांख्य के निवृत्ति मार्ग और कर्म के प्रवृत्ति मार्ग की व्याख्या और प्रशंसा पाई जाती है। एक की निंदा और दूसरों की प्रशंसा गीता का अभिमत नहीं। दोनों मार्ग दो प्रकार की रूचि रखने वाले मनुष्यों के लिए हितकर हो सकते हैं और ऐसा है भी। संभवतः संसार का दूसरा कोई भी कर्म के शास्त्र का प्रतिपादन इस सुन्दरता, इस सूक्ष्मता और निष्पक्षता से नहीं करता। इस दृष्टि से गीता एक अद्भुत मानवीय शास्त्र है। इसकी दृष्टि एकांगी नहीं, सर्वांगपूर्ण है। गीता में दर्शन का प्रतिपादन करते हुए भी जो साहित्य का आनन्द है वह इसकी अतिरिक्त विशेषता है। तत्व ज्ञान का सुसंस्कृत काव्य शैली के द्वारा वर्णन गीता का निजी सौरभ है जो सहृदय को मुग्ध किये बिना नहीं रहता। इसीलिए इस महानतम् ग्रन्थ का नाम 'भगवद्गीता' पड़ा, अर्थात भगवान द्वारा दिया हुआ ज्ञान।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों के जीवन की परिस्थितियाँ करवट ले रही है। ईमानदारी से कार्य करने की शैली ही आपके व्यक्तित्व की पहचान है। पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना लाभकारी रहेगा। जीवन साथी के साथ मधुरतम पल व्यतीत होंगे।

वृष : इस सप्ताह बहुत सारे ऐसे अवसर आयेंगे जो आपके जीवन में सुख व दुःख का मिश्रित फल देंगे। ऐसे लोगों के साथ रहें जो सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण हों। घरेलू खर्चो में वृद्धि होने से आपका मासिक बजट गड़बड़ा सकता है।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों के जीवन में परिवर्तनशील समय से सकारात्मक उर्जा प्रवाहित हो रही है, इस उर्जा को अपने में समाहित करने की कला को विकसित करना होगा। प्रसन्नता आपको ज्यादा जीवन्त, उर्जावान एंव सजृनशील बनायेंगी।

कर्क : यह सप्ताह कुछ लोगों के चेहेरों पर खोई हुयी मुस्कान को वापस लाने का काम करेगा। अधूरे कार्यो में प्रगति होगी तथा नयें अनुबन्धों का प्रसताव आयेगा। ऑफिस की गतिविधियों पर पैनी नजर रखनी होगी क्योंकि लोग आपको नीचा दिखानें के लिए लगातार प्रयासरत है।

सिंह : इस सप्ताह आर्थिक उपलब्धियों के लिए नकारात्मक व भावनात्मक सोंच को बदलना होगा। जीवन को आशावादी बनाने पर महसूस करेंगे कि कार्यो में सफलता पाना कितना आसान है। नवयुवक अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

कन्या : इस सप्ताह कुछ लोगों के व्यक्तित्व में गजब का आकर्षण आयेगा जिससे आपकी शासन व प्रशासन में गहरी पैठ बनेंगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं की खरीददारी करने का अवसर प्राप्त होगा। जल्दबाजी में किये गये कार्यो में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है।

तुला : समय के संकेत को समझने का प्रयास करें। आप–अपने आस–पास के लोगों पर अत्यधिक विश्वास न करें अन्यथा धोखा खा सकते है। पिता व पुत्र में चला आ रहा वैचारिक मतभेद शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा। परिवर्तन ही संसार का नियम है, इसलिए अपने आपको बदलने का प्रयास करें।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों के मन में सन्तान के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। नवयुवक अपनी स्पष्टवादी बातों पर नियन्त्रण करें अन्यथा परिवार में किसी से खटपट हो सकती है। छात्र अपने दोस्तों से ज्यादा वफादारी न निभायें। रूके हुये धन के प्रति सक्रियता बनायें रखें।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों की मनः स्थिति ठीक नहीं रहेगी। राजनैतिक लोगों के साथ कुछ समय व्यतीत होने के संकेत है। आय व व्यय की समानता रहेगी जिससे मनोकूल इच्छाओं में बाधायें आयेंगी। सहन उतना कीजिये जितना उचित हो।

मकर : जीवन में नियन्त्रण व सन्तुलन के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। यदि कुछ पाना है तो जीवन को अनुशासित करना होगा। जीवन स्वंय में एक आमोलक है जिसे यदि सही ढंग से जीया जाये तो परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। जिस वस्तु के प्रति आप भागेंगे वह उतना ही दूर जायेगी।

कुम्भ : इस सप्ताह जीवन के प्रति आपके मन में सकारात्मक विचार उत्पन्न होगा जिससे आप साहस व बुद्धिमता पूर्ण कार्यो को अंजाम देंगे। मन की स्वच्छता के बगैर किसी कामनायें पूर्ण नहीं होती है। इसलिए मन की स्वच्छता बनायें रखें।

मीन : मनुष्य की पहचान उसके कर्मो से होती है न कि खूबसूरती से। जुबान बोलने वाली मशीन है, इससे कुछ भी बोला जा सकता है। आप किसी के बहकावे में आकर कोई गलत निर्णय न लेले। अतः सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जांक जिमि गुन बिलगाहीं।।

सुधा सुरा सम साधु असाधु। जनक एक जग जलधि अगाधू।।

दोनों (संत और असंत) जगत् में एक साथ पैदा होते है, पर (एक साथ पैदा होने वाले) कमल और जोंक की तरह उनके गुण अलग–अलग होते है। (कमल दर्शन और स्पर्श से सुख देता है, किन्तु जोंक शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगती है।) साधु अमृत के समान (मृत्यु रूपी संसार से उबारने वाला) और असाधु मदिरा के समान (मोह, प्रमाद और जड़ता उत्पन्न करने वाला) है, दोनों को उत्पन्न करने वाला जगत् रूपी अगाध समुद्र एक ही है। (शास्त्रों में समुद्र मंथन से ही अमृत और मदिरा दोनों की उत्पत्ति बतायी गयी है) ।।३।।

भल अनभल निज करतूती। लहत सुजस बपलोक बिभूती।।

सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि व्याधू।।

गुन अवबुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई।।

भले और बुरे अपनी–अपनी करनी के अनुसार सुन्दर यश और अपयश की सम्पत्ति पाते है। अमृत, चन्द्रमा, गंगाजी और साधु एवं विष, अग्नि, कलियुग के पापों की नदी अर्थात् कर्मनाशा और हिंसा करने वाला व्याध, इनके गुण–अवगुण सब कोई जानते है, किन्तु जिसे जो भाता है, उसे वही अच्छा लगता है।।४–५।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 27 फरवरी से 05 मार्च 2019 तक

अध्यक्षीय

इस्लामिक कट्टरपंथ को जड़ से खत्म करने की जरूरत

इस्लामिक आतंकवाद से न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया परेशान है। इसलिए अब समय आ गया है कि इसे जड़ से खत्म करने के लिए कोई ठोस कदम उठाया जाना चाहिए। अगर बात कश्मीर की करें तो लगभग एक सप्ताह पहले ही कश्मीर के बारामुला जिले को आतंकमुक्त क्षेत्र घोषित किया गया। ऑपरेशन आल आऊट के दौरान सेना ने पांच सौ आतंकियों को जहन्नुम पहुंचाया परंतु १४ फरवरी को एक आत्मघाती आतंकी हमले में केंद्रीय आरक्षी बल के ४४ जवान शहीद हुए और कई दर्जन घायल हो गए। कोई इससे इंकार नहीं कर सकता कि कश्मीर में सेना आतंक का मोर्चा जीतने के करीब है और इस आत्मघाती हमले की सच्चाई से भी मुंह फेरा नहीं जा सकता। इस हमले से देश आतंक के नए दौर में प्रवेश करता दिख रहा है, जिसमें बहुत बड़े खूनखराबे के लिए अधिक आतंकियों की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि एक–दो आत्मघाती ही बड़ी कार्रवाई को अंजाम दे सकते हैं। वैसे तो कश्मीर में पहले भी फिदाइन हमले होते रहे हैं परंतु पूर्व में इस तरह के हमले विदेशी मूल के जिहादी करते रहे हैं। आतंकवाद एक–दो प्रहारों से या कुछ महीनों में मिटने वाला नहीं और इस लंबी लड़ाई को सामरिक मोर्चे के साथ–साथ वैचारिक धरातल पर भी लड़ना होगा। हथियारों की दृष्टि से तो सेना व सुरक्षा बल अपने काम को सफलतापूर्वक अंजाम दे रहे हैं परंतु विचारों की लड़ाई से हम कहीं न कहीं कमतर दिख रहे हैं। तभी तो विदेशी ताकतें युवाओं को गुमराह करने में सफल हो जाती हैं। रक्षा एजेंसियां व विशेषज्ञ कई बार चेता चुके हैं कि आतंकवाद की धारा जड़ें फैला अरब से इस बहुत–सा पैसा भारत पहुंच रहा ज ग ह – ज ग ह मस्जिदें, मदरसे बन रहे हैं जहां मध्ययुगीन सोच को बाल व युवा मस्तिष्क में रोपा जा रहा है। पहले से ही इस्लामिक आतंक का दंश झेल रहे कश्मीर में वहाबी कायरस आग में घी डाल रहे हैं। दुनिया में खतरा बन कर सामने आया वहाबी सम्प्रदाय इस्लाम की एक कट्टर शाखा है। विश्व के अधिकांश वहाबी कतर, सउदी अरब और यूएई में हैं। सउदी अरब के लगभग २३ प्रतिशत लोग वहाबी हैं। इस जेहादी आंदोलन ने देश के मुसलमानों में अलगाववाद की भावना जागृत की और अब उन्हें आतंकवाद की ओर धकेल रहा है। यह हैरानी की बात है कि तमाम आधुनिक टेक्नोलजी से लैस अमेरिका सहित शेष विश्व आत्मुग्धता में खोया रहा और वहाबी आतंकवाद का चोला पहने आईएसआईएस खतरनाक हो गया। अमेरिका ने आईएसआईएस संकट को शिया–सुन्नी संघर्ष बताया लेकिन इस तथ्य को भुला दिया कि इसकी जड़ वो वहाबी आतंक है जिसकी पैदाइश अलकायदा के रूप में सऊदी अरब में हुई। जिसने ओसामा बिन लादेन से लेकर अबू बकर, अल बगदादी तक की मंजिल बिना सऊदी अरब की मदद के तय नहीं की। भारत में इसे वहाबी आतंक के नाम से जाना जाता है, जो कभी लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद, तहरीक–ए–तालिबान, अल–कायदा, अहले हदीस, तो कभी लश्कर–ए–झंगवी के नाम से सामने आता है। सउदी अरब के बाद पाकिस्तान वहाबी विचारधारा का केंद्र बना जो भारत में इसका निर्यात कर रहा है। मुस्लिम तीर्थ काबा वाला सउदी अरब का मक्का शहर मुसलमानों का तीर्थस्थल है। इसीलिए पाकिस्तान के साथ–साथ कई भारतीय दल विशेषकर धर्मनिरपेक्ष राजनीति करने वाले लोग कट्टर वहाबी विचारधारा की आलोचना को इस्लाम की निंदा से जोड़ देते हैं और जाने अनजाने इसका संरक्षण करते हैं। जब भी इस्लाम में सुधारवाद की बात होती है तो धर्मनिरपेक्ष दल व बुद्धिजीवी न केवल कठमुल्लों के साथ खड़े नजर आते हैं बल्कि सुधार के प्रयासों को सांप्रदायिक बताते हैं। मुस्लिम पोंगापंथियों के सामने हथियार डाल देने वाले देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल कांग्रेस का रवैया अत्यंत शर्मनाक रहा जिसने वोट की राजनीति के चलते हमेशा कठमुल्लों के साथ खड़ी रही। वहाबी कट्टरपंथ आज नवीनतम तकनीक से लैस है। इसी खतरे को भांपते हुए केंद्र सरकार ने सूचना टेक्नोलोजी अधिनियम २००० में संशोधन कर दस एजेंसियों को लोगों के कंप्यूटर चेक करने के अधिकार देने का प्रयास किया तो विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर इस कदम का मुखर विरोध किया गया। देश जब आतंकवाद, माओवाद, नक्सलवाद जैसी खूनी विचारधाराओं से संघर्ष कर रहा है तो इस तरह की वैचारिक भटकाहट कहीं न कहीं देशविरोधी ताकतों को प्राश्रय देने का काम करती दिखाई देने लगती हैं।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

आतंक पर अब बड़ी कार्रवाई का इंतजार

पुलवामा की घटना ने देश को झकझोर कर रख दिया है। अब तक जम्मू–कश्मीर में आतंकी हमारी सेना के जवानों को मारते आ रहे हैं, कितनी सरकारें आयीं और गयीं लेकिन इसका कोई स्थाई हल नहीं निकल पाया। कभी पाकिस्तान की सेना संघर्ष विराम का उल्लंघन करती है तो कभी आतंकियों को घुसपैठ कराकर भारतीय सीमा में भेजती है। जैश–ए–मोहम्मद के आतंकी हमेशा से ही ऐसी घटनाओं को अंजाम देते आ रहे हैं इनका सफाया होना बहुत ही जरूरी है। एक सर्जिकल स्टाइक से कुछ नहीं होगा। आतंकियों का समय–समय पर सफाया होना बहुत जरूरी है, नहीं तो पुलवामा, पठानकोट और उरी जैसी घटनाएं होती रहेंगी। लेकिन यह बात समझ के परे है कि क्यों इंटेलीजेंस को इस हमले की खबर नहीं लगी। अगर रोड ओपनिंग पार्टी और इंटेलीजेंस नजर रखते तो इस हमले को टाला जा सकता था। ऐसा कैसे हो सकता है कि ७८ वाहनों के काफिले से २५०० जवान श्रीनगर आ रहे थे और आरओपी को भनक तक नहीं लगी। यह घटना साजिश नजर कहीं इसमें कुछ नजर आती हैं जवान श्रीनगर आ आतंकियों को किसी स्लीपर सेल जैसे लोगों के होने के आशंका लगती है। जिस प्रकार जैश–ए–मोहम्मद के आतंकियों ने अवंतिपोरा में सीआरपीएफ के काफिले को उड़ा दिया। जिसमें लगभग ४२ जवान शहीद हुए और २० से ज्यादा जख्मी हुए। यह बहुत ही दुखद घटना है। सभी जवान छुट्टी बिताकर अपने काम पर वापस लौट रहे थे। इससे पहले भी उरी में १८ सितम्बर २०१६ में बड़ी घटना घटी थी इसमें १६ जवान शहीद हुए थे। इसी साल १७ जनवरी २०१६ की बात की जाये तो घंटाघर लाल चौक, शोपियां पुलिस कैम्प में तीन ग्रेनेड हमले किए गये थे। इस हमले में असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर इकबाल सिंह और दो ट्रैफिक पुलिस कर्मियों सहित छह लोग घायल हुए थे। गणतंत्र दिवस पर भी आतंकियों ने सुरक्षा बलों को निशाना बनाते हुए कश्मीर में दो जगह हमले किए थे। पहला हमला पुलवामा के पंपोर और दूसरा खानमो इलाके में किया गया था। आतंकियों ने एसओजी और सीआरपीएफ को निशाना बनाया। जवाबी कार्रवाई में सुरक्षा बलों ने दो आतंकी मार गिराए, हमले में पांच जवान जख्मी भी हुए थे। ५ दिसंबर २०१४ को बारामूला जिले के उरी सेक्टर में सेना के रेजिमेंट हथियार कैंप पर आतंकियों के समूह ने हमला बोला था। हमले में एक लेफ्टिनेंट कर्नल और जवानों के अलावा एक एएसआई और दो क न्स्टेबल शहीद हुए थे। २७ नवंबर २०१४ को जम्मू जिले के अर्निया सेक्टर में ब र्डर से सटे एक गांव में आतंकियों ने हमला बोला था। हमले में तीन जवान शहीद हुए थे और चार नागरिक भी मारे गए थे। इस घटना को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कड़ी कार्रवाई कर सकते हैं क्योंकि जब उरी में आतंकी हमला हुआ था तब भी प्रधानमंत्रो, गृहमंत्रो, अजीत डोभाल व सेना के अधिकारियों साथ बैठक कर सर्जिकल स्ट्राइक पर निर्णय लिया था। वहीं विदेश राज्य मंत्रो और पूर्व सेनाध्यक्ष वीके सिंह इस घटना के बाद कड़ी प्रतिक्रिया जताई और बदला लेने का जिक्र भी किया, जिससे साफ नजर आ रहा है कि आतंकियों के खिलाफ जल्द ही बड़ी कार्रवाई की जायेगी। पूरे देश को फिलहाल बड़ी कार्रवाई का इंतजार है क्योंकि अब पानी सिर के ऊपर चला गया है।

राष्ट्रीय आह्‌वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

वर्षा ऋतु के रोगों से कैसे बचें?

डॉ. रणवीर सिंह आर्य

वर्षाकालीन रोगों से बचाव

निम्न नियमों का पालन करने से वर्षाकालीन रोगों से बचा जा सकता है–

❖ वर्षा ऋतु में शुद्ध जल और शुद्ध वायु का सेवन करना अति आवश्यक है इसलिए पानी को उबालकर ठंडा करके सेवन करना चाहिए।

❖ किसी स्थान में नदी, तालाब, पावड़ी का पानी पिया जाता है ऐसी स्थिति में लाल दवा पानी में डालकर शुद्ध कर लें या तुलसी के पत्ते और फिटकरी पीसकर डाल देने से जल शुद्ध हो जाता है और उसमें वर्षाकालीन जीवाणु पैदा होने की संभावना नष्ट हो जाती है और संक्रमण का भय नहीं रहता है।

❖ नालियों की सफाई रखें पानी इधर–उधर इकट्ठा नहीं होने दें जिससे मच्छर एकत्रित होकर मलेरिया और डेंगू ज्वर के वाहक न बन सकें। यदि पानी थोड़ा बहुत इकट्ठा हो गया है तो उसमें मिट्टी का तेल अथवा डी.डी.टी. गैमक्सीन जैसी मच्छररोधी दवाई डाल दें।

❖ वर्षा ऋतु में वात का प्रकोप होता है और संचित हुआ पित्त कुपित होने लगता है इस कारण इन दोनों को कुपित करने वाले पदार्थों से बचे रहें। ज्यादा चटपटे गरिष्ठ आहार, अंडे, मांस, मछलियाँ, अम्लकारक पदार्थ और नशीले पदार्थों का सेवन कदापि न करें। रात्रि का भोजन सूर्यास्त से पूर्व ही कर लेना आवश्यक है जैसा हमारे जैनी भाई करते हैं। इसका अनुभव मुझे भी हुआ है सूर्यास्त से पूर्व भोजन करने से वह शीघ्र पचता है। नींद अच्छी आती है आलस्य, सुस्ती नहीं रहती पेट में हल्कापन रहता जैसे कुछ खाया ही नहीं है।

❖ वायु कुपित न हो इसके लिए मधुर लवण और सादा भोजन करें। कब्ज, बदहजमी न होने दें क्योंकि इनसे ही वायु कुपित होती है।

❖ रात्रि भोजन, दिन में सोना, देर रात्रि तक जागरण, अत्यधिक मैथुन, रेचक औषधि का सेवन आदि वर्जित है।

❖ वर्षा से भीगने पर गीले कपड़े अधिक देर तक न पहनें। किसी खुरदुरे कपड़े से पूरे बदन को अच्छी तरह पोंछ लें और सरसों के तेल की मालिश करके सूखे कपड़े पहन लें। इससे दाद, खाज, खुजली के प्रकोप से बचा जा सकेगा क्योंकि इस ऋतु में गंदगी के कारण संक्रमण का भय अधिक रहता है रक्त भी दूषित हो जाता है। नीम के पत्ते सरसों के तेल में पकाकर छानकर खाज–खुजली पर लगाएँ नीम की कोपलों का सेवन करने से ही इन रोगों से बचा जा सकता है।

❖ रात्रि को नींद अच्छी आये और मच्छरों के प्रकोप से बचे रहें इसके लिए मच्छरदानी लगाकर सोएँ अथवा गुलगुल, अजवायन, गिलोय, नीम की खली इत्यादि से युक्त किसी आयुर्वेदिक धूपबत्ती के धुएँ का उपयोग करें। हमारे ऋषि–मुनियों ने प्रत्येक ऋतु की सन्धि होने पर कीटाणुओं के प्रकोप के विज्ञान को दृष्टिगोचर रखकर किसी बड़े त्योहार का सर्जन किया है। वर्षाकाल के बाद विजयदशमी, दीपावली, शरद और ग्रीष्म की सन्धि पर होली का त्योहार इसी कारण से ताकि सामूहिक रूप से सभी अपने घरों की सफाई करके यज्ञ करें यह भेषज यज्ञ होता था जिसमें गूलर, बड़, आक, पलाश, गिलोय, पाखर, पीपल, आम, चन्दन इत्यादि की समिधा तथा गिलोय, अश्वगन्धा, जटामांसी, गुग्गुल, शक्कर, तिल इत्यादि द्रव्यों की सामग्री से सामूहिक यज्ञ होता था। इससे प्रत्येक ऋतु की सन्धि के उत्पन्न कीटाणु नष्ट करके संक्रमण से बचा जा सकता था।

वर्षाकालीन रोगों की चिकित्सा

❖ वर्षा काल में रक्तदोष होने से खाज, खुजली, फोड़े, फुंसी, घुमौरियाँ, दाद, चम्बल इत्यादि हो जाते हैं। इसके लिए मारिच्यादि तेल, चर्मक्योर वटी का प्रयोग लाभकारी है।

❖ भोजन के बाद मंजिष्ठादि क्वाथ खादिरारिष्ट, सारिवाधरिष्ट कोई भी एक दवा की ३–३ चम्मच समभाग पानी मिलाकर दो बार सेवन करें। गरम मसाले, गरिष्ठ भोजन का परित्याग करें।

❖ शीतपित्ती Urticare सरद–गरम मिलने से शीत पित्ती हो जाती है। गीले कपड़े मत पहनिए। स्नान के पानी में एक या दो चम्मच खाने का सोडा या जीरे का चूर्ण डालकर स्नान करें। पित्ती होने पर हींग को घी में मिलाकर लेप करें। आरोग्यवर्धनी वटी, त्रिकटु चूर्ण, नागकेशर, महामांजिष्ठादि क्वाथ आदि औषधियाँ लाभकारी हैं।

❖ आँव, पेचिश, मरोड़ : पाचन शक्ति की दुर्बलता, दूषित जल के सेवन से खूनी दस्त, मरोड़ हो जाते हैं। इसके लिए गंगाधर चूर्ण, कुटजारिष्ट, बिल्वचूर्ण, ईसबगोल, कुटजघनवटी, दाड़िमावलेह औषधियाँ लाभकारी हैं। आमवात, गठिया, जोड़ों का दर्द इत्यादि रोगों का प्रकोप होने पर सोंठ, अवश्गन्धा, मेथी का चूर्ण, गरम पानी से लेने से लाभ हो जाता है। पित्त प्रकृति वाले रोगी चिकित्सक के परामर्श से वातनाशक इलाज कराएँ। इस प्रकार उचित आहार–विहार से वर्षाकालीन रोगों से बचा जा सकेगा।

बुलेटप्रूफ जैकेट कैसे बनती है और यह कैसे रक्षा करती है?

बुलेटप्रूफ जैकेट आधुनिक समय में सैनिको को सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है। इस जैकेट को इस तरह से बनाया जाता है कि इसको पहने हुए व्यक्ति को यदि गोली भी लग जाये तो उसकी जान को कोई खतरा नहीं होता है। इस लेख में हम इस बात को जानने का प्रयास करेंगे कि यह बुलेटप्रूफ जैकेट कैसे तैयार किया जाता है और यह जैकेट किस तरह गोली के प्रभाव को निरस्त करती है।

इसके बनने में किस प्रकार के मैटीरियल का उपयोग किया जाता है?

बुलेटप्रूफ जैकेट के निर्माण के लिए सबसे पहले इसके लिए जरूरी कपड़ों का निर्माण किया जाता है। इसके लिए फाइबर या फिलामेंट का उत्पादन किया जाता है जो कि वजन में हल्का लेकिन मजबूत होता है। इसमें सबसे प्रसिद्ध मैटीरियल का नाम केवलर है जो कि एक पैरा–अरैमिड सिंथेटिक फाइबर होता है। केवलर तरल रासायनिक मिश्रण से एक ठोस धागा कताई द्वारा उत्पादित किया जाता है। एक अन्य फाइबर, डाइनीमा है जिसे पॉलीथीन बेस से बनाया जाता है। यह बहुत मजबूत होने के साथ–साथ बहुत हल्का भी होता है।

बुलेटप्रूफ जैकेट को कैसे तैयार किया जाता है?

बुलेटप्रूफ जैकेट में दो परतें होती हैं सबसे ऊपर सेरैमिक पर्त होती है उसके बाद बैलिस्टिक पर्त लगाई जाती है। इन दोनों परतों को मिलाकर ही जैकेट तैयार होती है। जैकेट बनाने की प्रक्रिया में फाइबर या फिलामेंट को बड़ी रील के रूप में बना लिया जाता है। इसके बाद इस रील और पालीथीन बेस की सहायता से मजबूत चादर (बैलिस्टिक शीट) का निर्माण किया जाता है। अंतिम रूप से निर्मित बैलिस्टिक शीट क ऊपर तैयार धागे को लगभग १३०–२०० मीटर ३२०–६६० फीट) की लंबाई में रोल किया जाता है जो कि किसी अन्य वस्त्र के रोल की तरह दिखता है।

बुलेटप्रूफ जैकेट कैसे काम करती है?

जब कोई गोली बुलेटप्रूफ जैकेट से टकराती है तो सबसे पहले वह सेरैमिक लेयर से टकराती है। बेहद मजबूत सेरैमिक लेयर से टकराते ही गोली का आगे का नुकीला सिरा टुकड़ों में टूट जाता है और गोली छोटे कणों के रूप में जैकेट पर फैल जाती है। इस कारण गोली का फोर्स कम हो जाता है और उसकी भेदन क्षमता कम हो जाती है और गोली लगने वाले व्यक्ति को कम नुकसान होता है। इसके बाद का काम बैलिस्टिक पर्त करती है। गोली के सेरैमिक लेयर से टकराकर टूटने के बाद बड़ी मात्रा में जो ऊर्जा निकलती है, उसे बैलिस्टिक पर्त सोख लेती है। इसके चलते बुलेटप्रुफ पहने सैनिक को कम से कम नुकसान होता है और वह सुरक्षित बच जाता है। बुलेटप्रूफ जैकेट गोली से इस प्रकार बचाव करती है।

बुलेटप्रुफ जैकेट के कितने प्रकार होते हैं

केवल एक कॉमन मैटीरियल है, जिसका इस्तेमाल बुलेट प्रूफ जैकेट बनाने में किया जाता है। इस मैटरीरियल से बनी जैकेट और हेल्मेट को केवलर जैकेट या हेल्मेट कहा जाता है। इसके अलावा वेकट्रैन नाम के मैटीरियल की सहायता से भी बुलेटप्रूफ जैकेट तैयार किये जाते हैं। इससे बनने वाले जैकेट और हेल्मेट को वेकट्रैन जैकेट या वेकट्रैन हेल्मेट के नाम से जाना जाता है। वेकट्रैन जैकेट केवलर से मजबूत मानी जाती है क्योंकि यह स्टील से भी १० गुना ज्यादा मजबूत मानी जाती है।

कितनी कीमत होती है एक जैकेट की

इस जैकेट की कीमत इसमें इस्तेमाल किये जाने वाले मैटीरियलल के आधार पर तय होती है। वेकट्रैन से बनने वाली जैकेट की कीमत केवलर जैकेट से अधिक होती है। सामान्य तौर पर एक जैकेट की कीमत ४०००० रुपए से शुरू होकर २ लाख रुपये तक होती है। इस जैकेट का वजन ८ किलो के आसपास होता है। हालाँकि कानपुर स्थित आर्डिनेंस फैक्ट्री में इससे कम वजन की जैकेट को बनाने का काम जारी है। इन जैकेट्स की एक विशेषता यह भी

शेष पृष्ठ 10 पर

परशुराम भगवान विष्णु के छठे अवतार

✍ ओम प्रकाश तिवारी

परशुराम भगवान विष्णु के छठे अवतार कहे जाते हैं। वह त्रेता युग 'रामायण काल' के मुनि थे। उनका जन्म भृगुश्रेष्ठ महर्षि जमदग्नि की ओर से करवाए गए पुत्रेष्टि यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप हुआ।

पौराणिक उल्लेख– परशुराम जी का उल्लेख रामायण, महाभारत, भागवत पुराण और कल्कि पुराण इत्यादि अनेक ग्रन्थों में किया गया है। वे अहंकारी और धृष्ट वंशी राजाओं का पृथ्वी से २१ बार संहार करने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना चाहते थे। कहा जाता है कि भारत के अधिकांश ग्राम उन्हीं के द्वारा बसाए गए। वे भार्गव गोत्र की सबसे आज्ञाकारी संतानों मे से एक थे, जो सदैव अपने गुरूजनों और माता–पितज्ञ की आज्ञा का पालन करते थे। वह सदा बड़ों का सम्मान करते थे और कभी भी उनकी अवहेलना नहीं करते थे। उनका भाव इस जीव सृष्टि को इसके प्राकृतिक सौंदर्य सहित जीवंत बनाए रखना था। वे चाहते थे कि यह सारी सृष्टि पशु पक्षियों, वृक्षों, फल, फूल और समूची प्रकृति के लिए जीवंत रहे। उनका कहना था कि राजा का धर्म वैदिक जीवन का प्रसार करा है ना कि अपनी प्रजा से आज्ञापालन करवाना। वे एक ब्राम्हण के रूप में जन्में अवश्य थे लेकिन कर्म से एक क्षत्रिय थे। उन्हें भार्गव के नाम से भी जाना जाता है।

उनके जाने–माने शिष्य थे भीष्म, द्रोण 'कौरव व पांडवों के गुरु व अश्वत्थामा के पिता' और कर्ण।

भृगु ऋषि का वरदान–प्राचीन काल में कन्नौज में गाधि नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनकी सत्यवती नाम की एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। राजा गाधि ने सत्यती का विवाह भृगुनन्दन के साथ कर दिया। सत्यवती के विवाह के पश्चात् वहाँ भृगु ऋषि ने आकर अपनी पुत्रवधु को आशीर्वाद दिया और उससे वर मांगने के लिए कहा। इस पर सत्यवती ने उनसे अपनी माता के लिए एक पुत्र की याचना की। सत्यवती की याचना पर भृगु ऋषि ने उसे दो चरू पात्र देते हुए कहा कि जब तुम और तुम्हारी माता ऋतु स्थान कर चुकी हों तब तुम्हारी मां पुत्र की इच्छा लेकर पीपल का आलिंगन करना और तुम उसी कामना को लेकर गूलर का आलिंगन करना। फिर मेरे द्वारा दिए गए इन चरूओं का सावधानी के साथ अलग–अलग सेवन कर लेना। इधर जब सत्यवती की मां ने देखा कि भृगु ने अपनी पुत्रवधु को उत्तम सन्तान होने का चरू दिया है तो उसने अपने चरू को पानी पुत्री के चरू के साथ बदल दिया।

इस प्रकार सत्यवती ने अपनी माता वाले चरू का सेवन कर लिया। योगशक्ति से भृगु को इस बात का ज्ञान हो गया और वे अपनी पुत्रवधु के पास आकर बोले कि पुत्री! तुम्हारी माता ने तुम्हारे साथ छल करके तुम्हारे चरू का सेवन कर लिया है। इसलिए अब तुम्हारी सन्तान ब्राम्हण होते हए भी क्षत्रिय जैसा आचरण करेगा और तुम्हारी माता की संतान क्षत्रिय होकर भी ब्राम्हण जैसा आचरण करेगा। इस पर सत्यवती ने भृगु से विनती की कि आप आशीर्वाद दें कि मेरा पुत्र ब्राम्हण का ही आचरण करे,भले ही मेरा पौत्र क्षत्रिय जैसा आचरण करे। भृगु ने प्रसन्न होकर उसकी विनती स्वीकार कर ली। समय आने पर सत्यती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ। जमदग्नि अत्यन्त तेजस्वी थे। बड़े होने पर उनका विवाह प्रसेनजित की कन्या रेणुका से हुआ। रेणुका से उनके पांच पुत्र हुए जिनके नाम थे–रूकमवान, सुखेण, वसु, विश्वानस और परशुराम

पिता जमदग्नि की हत्या और परशुराम का प्रतिशोध– कथानक है कि हैहय वशाधिपति कार्त्तवीर्यअर्जुन 'सहस्त्रजरुन' ने घोर तप द्वारा भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न कर एक सहस्त्र भुजाएं तथा युद्ध में किसी से परास्त न होने का वर पाया था। संयोगवश वन में आखेट करते वह जमदग्निमुनि के आश्रम जा पहुंचा और देवराज इन्द्र द्वारा उन्हें प्रदत्त कपिला कामधेनु की सहायता से हुए समस्त सैन्यदल के अद्भुत आतिथ्य सत्कार पर लोभवश जमदग्नि की अवज्ञा करते हए कामधेनु को बलपूर्वक छीनकर ले गया। कुपित परशुराम ने फरसे के प्रहार से उसकी समस्त भुजाएं काट डाली व सिर को धड़ से अलग कर शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दुओं का प्रतिशत लगातार घटता जा रहा है! अतः ध्यान देवें!!

- सरकारी आंकड़ों के अनुसार खण्डित भारत में हिन्दू ८८ प्रतिशत थे।
- ७१ वर्षों में सभी गांधीवादी दलों ने हिन्दू की भरपूर उपेक्षा व अवहेलना की है।
- सभी दल, मुर्दा हिन्दू को, साम्प्रदायिक कहते हैं।
- केवल सावरकरवादी अ० भा० हिन्दू महासभा, उसे राष्ट्रवादी कहती है।
- सरकार, सभी दल, दूरदर्शन, आकाशवाणी, अखबार, पत्रकार, बुद्धिजीवी, स्वार्थी नेता मुर्दा हिन्दू समाज, खुलकर स्वीकार कर रहे हैं कि हिन्दू का प्रतिशत ८० है।
- कोई यह नहीं पूछता है कि प्रतिशत ८८ से घटकर ८० कैसे हो गया?
- रहन सहन का स्तर ऊंचा करने के लिए हिन्दू में परिवार को छोटा रखने की जबर्दस्त होड़ लगी हुई है।
- २०१६ के चुनाव प्रचार में भी, कोई नेता हिन्दू के घटते प्रतिशत पर कुछ नहीं बोलेगा। प्रतिशत को घटने पर चिन्ता प्रकट नहीं करेंगे और चीन की भाँति अनिवार्य परिवार नियोजन लागू करने का वायदा भी नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें तो केवल जीतने की चिन्ता है। भोला, अदूरदर्शी, मुर्दा हिन्दू लम्बे समय से गोवध रोकने के लिए संघर्ष कर रहा है किन्तु सफलता नहीं मिली है। उसे गऊं की फिक्र है लेकिन अपनी चिन्ता नहीं है। गऊ रक्षा में लगे रहने के कारण हिन्दू १००० साल तक मुस्लिमों का गुलाम रहा। उस अवधि में बलात धर्म परिवर्तन हुए, अमानवीय अत्याचार हुए फिर भी गोवध बन्दी पर वह अभी भी लड़ता है और पिटता है।

१९४७ में विभाजन के समय कानून बना था कि भारत से सभी १०० प्रतिशत मुस्लिम, पाकिस्तान चले जाएंगे क्योंकि जिन्ना ने कहा था कि हम मिलकर नहीं रहना चाहते हैं। मुस्लिम समर्थक गांधी–नेहरू ने एक तिहाई मुस्लिमों को पाकिस्तान नहीं जाने दिया। बाद में धर्मनिरपेक्ष भारत में नेहरू सरकार ने मुस्लिमों को भी अल्पसंख्यक मानकर विशेष रियायतें देकर भारी गलती की। अपनी नीति के अनुसार मुस्लिम समाज का एक वर्ग, अलगाववाद–देशद्रोह–अपराध–बम विस्फोट–सुरक्षा बलों पर पत्थर बाजी जैसी घटनाएं करके स्वयं को देशद्रोही सिद्ध कर रहा है। और उसका प्रतिशत १० से बढ़कर १७ हो गया है। देश हित में मांग की जाती है कि अदालतों में मुकदमें चलाकर देश द्रोहियों का वोट का अधिकार समाप्त किया जाए और गांधीवादी दलों को वोट न देकर नोटा को वोटें दी जाएं क्योंकि हिन्दू महासभा चुनाव लड़ने में सक्षम नहीं है।

सावरकर वाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों का अनादर

सर्वप्रथम कांग्रेस ने, १९८५ में, शाहबानों के मुकदमें में, दिए गए एतिहासिक निर्णय को, मुस्लिमों द्वारा किए जा रहे प्रबल विरोध को देखते हुए, अप्रभावी करने के लिए, संसद में मुस्लिम महिला बिल पारित करा दिया जिसके विरोध में श्री आरिफ बेग ने मंत्री पद से त्याग पत्र देकर, कांग्रेस छोड़कर, सराहनीय कार्य किया। कांग्रेस की कार्बन कापी भाजपा ने, कांग्रेस द्वारा निर्णय को, न मानने की, कई वर्षों तक आलोचना की, जो उचित है। २०१४ में, भाजपा सत्ता में आई तो उसने भी कांग्रेस की राह पर चलना शुरू कर दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जाति/जनजाति कानून में, कुछ परिवर्तन किए जिसका विरोध मायावती की पार्टी एवं अन्य संगठनों ने किया जबकि सवर्णों ने स्वागत किया। अन्त में भाजपा ने सवर्णों कां ध्यान नहीं रखकर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को अप्रभावी करने के लिए और पुरानी व्यवस्था लागू करने के लिए संसद में कानून २०१८ में बनवा दिया जिससे अनुसूचित जाति/जनजाति के संगठन सन्तुष्ट हो गए लेकिन २०१८ में ही ५ राज्यों की विधान सभा चुनावों में, भाजपा को, सवर्णों ने, नोटो का खूब प्रयोग करके, चुनावों में हरा दिया। २०१८ में, केरल के प्रसिद्ध सबरीमाला मन्दिर के बारे में जो निर्णय, सर्वोच्च न्यायालय ने, संविधान को, ध्यान में रखते हुए दिया उसका पुरुषों ने विरोध किया जबकि महिलाओं ने स्वागत किया। वामपंथी सरकार ने निर्णय का पालन करके उचित कार्य किया। हिंसक भीड़ को नियन्त्रण में लाने के लिए भारी फोर्स लगा दी। भाजपा ने निर्णय का समर्थन करने वाली महिलाओं का साथ दिया और फिर ४६ दिनों तक आन्दोलन करके, पुनः दुबारा आन्दोलन शुरू करने की घोषणा की है। सर्वोच्च न्यायालय को यह निर्णय देना चाहिए था कि वह मन्दिर के ८०० वर्ष पुराने संविधान को बदलने के लिए मन्दिर को निर्देश नहीं दे सकता है' कांग्रेस–भाजपा को राजनीतिक लाभ लेने की होड़ लगी हैं।

डा० गिरीश चन्द्र गुप्त, पूर्व मंत्री, नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर

हे भगवान! यह क्या हो रहा है

✍ प्रो. शामलाल कौशल

कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने अपने परम सखा, अर्जुन को गीता ज्ञान में कहा है कि यदा ही यदा धर्मस्य ग्लानि भवति भारत.. ..हे अर्जुन जब जब भी धर्म की ग्लानि होती है, पाप, अनाचार, दुराचार, अत्याचार बढ़ जाता है, मैं तब तब दुष्टों का संहार करने के लिये, धर्म की स्थापना के लिये अवतार लेता हूं। और वह सब बात बिल्कुल सत्य है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जब ईश्वर ने इस धरती को पापियों, आततायिओं, इन्सानियत की हत्या करने वालों, साधु संतों, मासूम बच्चों, लाचार महिलाओं, आम जनता पर जुल्म करने वालों से मुक्त कराने के लिये अवतार लिये। श्रीरामचन्द्र ने अवतार लेकर रावण तथा और बहुत सारे राक्षसों का संहार कर इस धरती का बोझ उठाया। श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर जहां अपनी मधुर बांसुरी बजाकर, गोप–गोपियों संग रास रचाकर रास लीलाएं रचाई वहां उस समय के राक्षस प्रवृत्ति के अपने ही मामा कंस तथा अन्य राक्षसों को यमलोक पहुंचाया, महाभारत के महासंग्राम में उन्होंने कौरवों तथा पांडवों म शांति दूत बनकर बेशक युद्ध टालन की कोशिश की लेकिन अन्ततः युद्ध होने की स्थिति में अधर्म के खिलाफ धर्म का साथ देते हुए अपने मित्र अर्जुन तथा पांडव पुत्रों का कौरवों के खिलाफ साथ दिया। इस महाभारत के युद्ध में शायद ही कोई परिवार रहा होगा जिसका कोई न कोई मरा न होगा आदि आदि।

लेकिन आज उस बात की जरूरत महसूस होने लगी है कि परमात्मा एक बार फिर अवतार लें। आज धर्म की हानि हो रही है। जगह–जगह धर्म के नाम पर साधु, संत, महंत, बाबे, तथाकथित गुरु, अपने आपको भगवान का अवतार बताने वाले, दो नम्बर के ढोंगी भगवाधारी धन सम्पत्ति के लोभी बने हुए हैं, मासूम बच्चियों, लाचार महिलाओं का यौन शोषण करते हैं, देहव्यापार में लगे हुए है। उनमें धर्म, कर्म नाम की कोई चीज दिखाई ही नहीं देती। बेईमानी, हिंसा, हत्या, क्रोध, कामवासना, लोभ, बलात्कार, गैंगरूप की घटनाओं का ग्राफ ऊपर ही ऊपर जा रहा है। कन्या भ्रूण हत्या बढ़ रही है। मां बाप अनेक कुर्बानियों के बाद पुत्र प्राप्त करके गौरन्वित महसूस करते हैं। लेकिन अधिकांश पुत्र बड़े होकर औरंगजेब की तरह अपने मां बाप को सताते हैं, उनकी धन सम्पत्ति पर कब्जा कर लेते हैं। मां बाप का अपमान, अवहेलना तथा तिरस्कार करते हैं, जन्म देने वाले मां बाप के मरने के ही रात दिन दुआ करते हैं मां बाप को घर से जलील करके निकाल देते हैं। कैसा घोर कलियुग है ये। आजकल परिवारों में सुख शांति नहीं है। कोई किसी का आज्ञाकारी नहीं। बड़े तो बड़े छोटे छोटे बच्चे है उनमें संस्कार नाम की कोई चीज नहीं। उनमें क्रोध, आवेश, अहंकार, आपराधिक प्रवृत्ति तथा बड़ों के प्रति अनादर की भावना कूट कूट कर भरी है। उन्हें शिक्षा संस्थाओं में जो शिक्षा दी जाती है वह सिर्फ पैसा कमाने के लिये ही होती है, नैतिकता, शराफत, भाईचारा, समाजसेवा, ईमानदारी, कठिन परिश्रम या फिर देश के लिये कुर्बान हो जाने के साथ उनका कोई मतलब नहीं होता, आज के विद्यार्थी अपने गुरुजनों की इज्जत करने के बदले में उन पर वार करते हैं। आज के शिक्षक गुरु द्रोणाचार्य, विश्वामित्र आदि की तरह नहीं होते। आज के शिक्षक अपने शिष्यों को समर्पित भावना से शिक्षा नहीं देते। कुछ शिक्षक तो अपनी पुत्री समान शिष्याओं की इज्जत आबरु तार तार करते सुने जा सकते हैं। मित्रों की बात भी जितनी कम की जाये उतना ही अच्छा है। आजकल श्रीराम तथा हनुमानजी की तहर निष्विल, निष्कपट तथा स्वार्थ रहित मित्रता कहां मिलती है। श्रीकृष्ण तथा सुदामा, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन, दुर्योधन तथा करण जैसी मित्रता देखने को भी नहीं मिलती। आजकल के मित्रों की मित्रता मौसमी तथा स्वार्थी होती है। दोस्ती दुश्मनी में बदलते देर नहीं लगती।

आजकल के शासक पहले के शासकों की तरह नहीं। पहले शासकों का उद्देश्य लोगों का जनकल्याण होता था। वे भेष बदलकर जनता के बीच में जाकर उनकी समस्याओं का पता करते और लोगों के दुःख दर्द दूर करने की कोशिश करते थे। लेकिन आज के शासकों में ऐसी बात नहीं अधिकांश शासक सत्ता के नशे में मदमस्त रहते हैं। बेशक हमारे यहां हर पांच साल बाद चुनाव होते हैं जिसके तहत मतदाता अपनी पसंद के प्रतिनिधि चुनकर उन्हें सरकार बनाने का अधिकार देते हैं। फिर भी ये प्रतिनिधि जनहित में कम और स्वहित में ज्यादा चलाते हैं। इनमें से बहुत सारे भ्रष्ट, व्याभिचारी, अधिकारों का दुरुपयोग करने वाले, सुर–सुरा में मस्त रहने वाले तथा जनता के प्रति लापरवाह होते जाते हैं। संविधान को तोड़ मरोड़कर जनता की भलाई के नाम पर सत्ता से चिपके रहने की कोशिश करते हैं। शासक लोग भाईचारा, आपसी प्रेमभावना, सौहार्द बनाने तथा सभी धर्मों को समान समझने के बदले में लोगों को आपस में लड़वाते हैं, दंगे करवाते है। देखो, अपने अपने स्वार्थ साधन के हिसाब से हमारे नेताओं ने भारत विभाजन कराके पाकिस्तान बनवा दिया और विभाजन के ७१ साल गुंजर जाने के बाद भी हिन्दुओं तथा मुसलमानों में न सिर्फ मूलभूत समस्याएं बरकरार हैं बल्कि पहले से ही कई गुणा ज्यादा बढ़ गई हैं। हमारे शासक जनता को बेवकूफ बनाकर हर हाल में वोटों की राजनीति करते हैं, उन्होंने जनकल्याण, देश की सुरक्षा, विकास आदि से कुछ नहीं लेना। आज दुनिया तबाही के कगार पर खड़ी हैं इतने परमाणु, अस्त्र शस्त्र, मिसाईले, हथियार बन गये हैं कि दुनिया का कई बार विनाया किया जा सकता है। यहां चाहे अलग–अलग शासक हों, अलग क्षेत्रों, भाषाओं, सम्प्रदायों वाले लोग हों, एक दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। किसी को कुछ भी हो सकता है। झूठ, पाखंड, लापरवाही, बेईमानी सभी बढ़ रहे हैं। कोई किसी को शर्म–लिहाज नहीं करता किसी से नहीं डरता।

हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है। आम आदमी के लिये जीना एक चैलेंज बन गया हैं जनसंख्या के बढ़ने से धरती कम पड़ती लगती है, महंगाई बढ़ने से लोगों में

शेष पृष्ठ 11 पर

राफेल चौकीदार की ईमानदारी पर सन्देह नहीं : सर्वोच्च न्यायालय

राफेल विमान सौदे में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से भाजपा को बड़ी राहत मिली है। यह फैसला सन्देश देता है कि रक्षा और सामरिक महत्त्व से जुड़े संवेदनशील व गोपनीय विषयों को बिना किसी ठोस आधार के अदालत में ले जाना और राजनीतिक लाभ के लिए मुद्दा बनाना उचित नहीं है। यहाँ तक कि इस मुद्दे में राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'चौकीदार चोर है' के लांछन से नवाजा था। किन्तु अब अदालत ने राफेल खरीद प्रक्रिया को काल्पनिक संदेहों से मुक्त कर परोक्ष रूप से नरेन्द्र मोदी को ईमानदार घोषित कर दिया है। इस दृष्टि से ३६ लड़ाकू विमानों की इस खरीद पर बिना प्रमाण के सवाल उठाना अनुचित है। हमारे पड़ोसी देश रक्षा–तैयारियों में हमसे बहुत आगे निकलते जा रहे है। इसे ध्यान में रखना आवश्यक है। सुप्रीम कोर्ट ने भारत और फ्रान्स के बीच विमान खरीदने के सौदे को चुनौती देने वाली सभी याचिकाएँ निरस्त कर दीं। न्यायालय ने कहा है कि सौदे को निरस्त करने के लिए इसके निर्णय लेने की प्रक्रिया पर वास्तव में सन्देह करने का कोई ठोस आधार नहीं है। सौदे में कोई गड़बड़ी नजर नहीं आयी है। प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई, न्यायमूर्ति संजयकिशन एवं केएम जोसेफ ने सर्वसम्मति से इस खरीद में एफआईआर की निगरानी में एसआईटी जाँच की माँगें ठुकरा दीं।

मालूम हो, भारतीय वायुसेना के लिए ५८,००० करोड़ रुपये की अनुमानित कीमत से ३६ राफेल विमान खरीदने के लिए फ्रान्स और भारत दोनों देशों की सरकारों के बीच अन्तर–सरकारी समझौता हुआ था। याचिकाओं में न्यायालय के समक्ष मुख्य रूप से तीन मुद्दे उठाये गये थे। पहला, निर्णय लेने की प्रक्रिया, दूसरा विमानों का मूल्य और तीसरा, भारतीस ऑफसेट साझीदार का चयन। पीठ ने खरीद से जुड़े दस्तावेजों की छानबीन के बाद कहा कि लड़ाकू विमान खरीदने जैसे संवेदनशील मुद्दे पर अदालत के लिए हस्तक्षेप की तथा सन्देह की गुजांइश नहीं है। साथ ही ऐसे मामलों में अँधेरे में हाथ–पैर मारना और अन्तहीन जाँच व्यक्तिगत नजरिये का आधार नहीं हो सकता है। अदालत १२६ विमानों की बजाय ३६ विमान खरीदने के सरकार के फैसले की समीक्षा नहीं कर सकती और विमान की कीमत तय करना भी न्यायालय का काम नहीं है। अदालत ने यह भी कहा कि सितम्बर २०१६ में जब सौदे को अन्तिम रूप दिया गया था, तब इस पर सवाल क्यों नहीं उठाये गये? सौदे पर सवाल उस समय उठे जब फ्रान्स के पूर्व राष्ट्रपति फ्रास्वा ओलांद ने वक्तव्य दिया। यह वक्तव्य न्यायिक समीक्षा का आधार नहीं हो सकता है। फैसले के आने के बाद गृहमन्त्री राजनाथ सिंह ने राहुल गान्धी से इस मामले में सदन और देश से माफी माँगने की बात कही है। अदालत के फैसले के बाद इस संवेदनशील मुद्दे पर पूर्णविराम लग जाना चाहिए; लेकिन कांग्रेस इससे २०१६ के लोकसभा में राजनीतिक लाभ उठाने के लिए अब भी प्रयत्नशील है।

अपनी भाषा और संस्कृति का विरोध क्यों?

शंकर शरण

स्वतन्त्रता मिलने पर भारतीय नेतागण दुविधा में थे कि देश की राष्टभाषा किसे बनायें। यह जानकर तब के अनेक विदेशी विद्वान् और राजदूत चकित थे कि संस्कृत जिस देश की महान् थाती है, वहाँ राष्ट्रभाषा की खोज का क्या मतलब? आज देश में भाषा, संस्कृति और शिक्षा की जो स्थिति है, वह देखते हुए लगता है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने सचमुच बड़ी भूल की। डॉ. आंबेडकर और कई नेताओं ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का

प्रयत्न किया था; क्योंकि संस्कृत को सदैव सम्पूर्ण भारतवर्ष की भाषा जाना जाता था। जवाहरलाल नेहरू जैसे पश्चिमप्रेमी भी मानते थे कि भारत की सबसे गौरवशाली विरासत संस्कृत भाषा और उसमें उपलब्ध महान् साहित्य है; परन्तु दुर्योगवश केवल एक वोट से संस्कृत राष्ट्रभाषा बनने से रह गयी। स्वयं आंबेडकर के कुछ अनुयायियों ने संस्कृत का विरोध किया था। उन्हें अपनी भूल का अहसास तब हुआ, जब हिन्दी के विरुद्ध दूसरी भारतीय भाषाओं को उभारने की राजनीति सरलता से सफल हो गयी। इससे अंग्रेजों को स्थायी रूप से पाँव जमाने–पसारने का उपाय हो गया। उसी का दुष्परिणाम है कि आज सभी भारतीय भाषाएँ, स्वदेशी ज्ञान और साहित्य हमारी नयी पीढ़ियों से छूटता जा रहा है। आज भी देश के कोने–कोने में संस्कृत के प्रति प्रेम और श्रद्धा है। लोग जानते हैं कि भारत की प्रतिष्ठा संस्कृत से ही रही है। भाषा और संस्कृति के अभिन्न सम्बन्ध को न समझ पाने और क्षुद्र स्वार्थों की राजनीति प्रबल हो जाने से स्वतन्त्र भारत में भारतीय भाषाओं की वह दुर्गति हो रही है, जो विदेशी शासनों में भी नहीं हुई।

हम अपनी भाषाओं के 'दिवस' तो मनाते हैं; मगर वे औपचारिकता भर हैं। १९६९ से सरकार ने देश में श्रावण पूर्णिता को 'संस्कृत दिवस' भी मनाना आरम्भ किया परन्तु हमारे आम छात्र या युवा यह शायद ही जानते हैं। धीरे–धीरे पढ़ाई–लिखाई अंग्रेजी में हो जाने का अनिवार्य कुपरिणाम अपनी भाषाओं और साहित्य से बढ़ते अपरिचय से हुआ। इससे भी भाषा और संस्कृति के अभिन्न सम्बन्ध का पता चलता है। आगे स्थिति क्या होगी, कहना कठिन है। एक समय था जब जनसंघ–भाजपा अंग्रेजी को सत्ता से हटाकर भारतीय भाषा लाने की पक्षधर थी। अब इस विषय पर ही चुप्पी छा गयी है। हालाँकि कई मन्त्री संस्कृत में शपथ लेते हैं; परन्तु औपचारिक शिक्षा में भारतीय भाषा–साहित्य के अध्ययन की चिन्ता कभी नहीं सुनायी पड़ती। वह पूरी तरह रामभरोसे है। अंग्रेजी के साथ पद–सत्ता–सुविधा के विशेषाधिकार जुड़े होने से हमारे बच्चों, युवाओं की सारी शक्ति उसी पर अधिकार करने की कोशिश में खर्च हो जाती है। उन्हें यह चेतना भी नहीं मिलती कि अपनी भाषा–साहित्य जानने की आवश्यकता भी क्या है? सचेत लोगों में इस विषय पर चिन्ता जरूर है। वे जानते हैं कि संस्कृत भाषा भारत के महान् ज्ञान–भंडार ही नहीं, अनेक महान् परम्पराओं की संरक्षक है। पूरी दुनिया में लोग अपनी परम्परा की रक्षा करते और उस पर गर्व करते हैं। तब भारतीय क्यों न करें? ध्यान रहे कि संस्कृत जानने वाला व्यक्ति किसी भी भारतीय भाषा को थोड़ा–बहुत समझ सकता है। वह हिन्दी, बंगला, मराठी जैसी कई भाषाएँ तो पूरी तरह समझ सकता है। फिर भी यहाँ संस्कृत विरोध भी एक तथ्य है। यह मूलतः हिन्दू–विरोध से जुड़ गया है। जैसा डीएम के नेत्री कनिमोझी ने कहा था, "संस्कृत का प्रयोग ईसाई या मुसलमान नहीं करते। तब आप क्यों इसे सब पर लादना चाहते हैं? हम एक समावेशी भारत चाहते हैं, जो सब का हो?" हमें यह नोट करना चाहिए कि ब्रिटिश शासन तक भारत में अनेकानेक मुस्लिम कवि, विद्वान, कलाकार हुए जिन्होंने संस्कृत–पौराणिक हिन्दू साहित्य के पात्रों को अपने लेखन, चिन्तन, कला के केन्द्र में रखा। कबीर, रहीम, रसखान, जायसी आदि नाम विख्यात हैं। मुसलमानों के लिए संस्कृत साहित्य, ज्ञान या प्राचीन हिन्दू देवी–देवताओं से दुराव रखना कोई अनिवार्य स्थिति नहीं रही।

कुछ लोग मनगढ़न्त, 'आर्य–आक्रमण सिद्धान्त' को भी संस्कृत विरोध का आधार बनाते हैं। उनके अनुसार यह किसी युग में किन्हीं विदेशी आक्रमणकारियों की भाषा थी; परन्तु इसमें कोई सच्चाई नहीं है। विविध पुरातात्त्विक, साहित्यिक प्रमाणों से यह निश्चित हो चुका है कि संस्कृत और वैदिक साहित्य मूलतः इसी देश के हैं। संस्कृत के शब्द दुनिया की कई भाषाओं में पाये जाते हैं; लेकिन बाहरी किसी भाषा के शब्द प्राचीन संस्कृत में नहीं हैं। यही स्थिति भौगोलिक स्थानों, नामों, रीतियों आदि की भी है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में किसी विदेशी स्थल, नाम या रीति का उल्लेख नहीं मिलता। संस्कृत से किसी भी भारतीय भाषा ओर उसके साहित्य के विकसित होने में अवरोध हुआ हो, इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता।

कुछ लोग संस्कृत को 'मृत' भाषा करार देते हुए कहते हैं कि एक प्रतिशत भारतीय भी संस्कृत नहीं बोलते। वह तो अधिकांश पंडितों, पुरोहितों द्वारा प्रयोग की जाती है; परन्तु दोनों ही बातें अतिरंजित हैं। संस्कृत की महत्ता दूसरी है। तुलना में देखें तो लैटिन भाषा भी मृत हो चुकी है। वह किसी देश में मातृभाषा नहीं है, पर आज भी यूरोप में लैटिन पढ़ना न केवल सम्मानजनक, बल्कि सुशिक्षित होने की शर्त जैसी है। भारत में संस्कृत के लिए वही स्थिति बनाना और आसान है। संस्कृत में उपलब्ध साहित्य और ज्ञान आज भी देश के कोने–कोने में किसी न किसी रूप में जाना जाता है। आवश्यकता केवल इसकी है कि शिक्षा के प्रति गलत अवधारणा को सुधार लिया जाये। शिक्षा केवल पैसे कमाने की योग्यता विकसित करने के लिए है, इस भ्रामक समझ ने सारी गड़बड़ी की है। उसी से यह मूर्खतापूर्ण विचार बना कि संस्कृत पढ़ना 'उपयोगी' नहीं है, लेकिन आज नहीं तो कल, हमें यह समझना

शेष पृष्ठ 11 पर

भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित होना चाहिए था असम उच्च न्यायालय

मेघालय हाईकोर्ट ने एनआरसी से सम्बन्धित अपने एक फैसले में भारत के इतिहास और विभाजन तथा उस दौरान हिन्दुओं और सिखों आदि पर हुए अत्याचारों का हवाला दिया है। साथ ही कहा है कि पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामिक देश घोषित किया। वहीं भारत का विभाजन भी धर्म के आधार पर ही हुआ था। उसे भी हिन्दू राष्ट्र घोषित होना चाहिए था; लेकिन वह धर्मनिरपेक्ष बना रहा। कोर्ट ने यह भी कहा है कि किसी को भी भारत को दूसरा इस्लामिक राष्ट्र बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अन्यथा वह दिन भारत और दुनिया के लिए प्रलयंकारी होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर भरोसा जताते हुए कोर्ट ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि यह सरकार मामले की गम्भीरता को समझेगी और आवश्यक कदम उठायेगी और पश्चिम बंगाल की मुख्यमन्त्री ममता बनर्जी राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए पूरा सहयोग देंगी। कोर्ट ने केन्द्र सरकार से अनुरोध किया है कि वह कानून बनाये, जिसमें पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आने वाले हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी, ईसाई, खासी, जैंता और गारो समुदाय को बिना किसी सवाल और दस्तावेज के भारत की नागरिकता दी जाये। बांग्लादेश से आये बंगाली हिन्दुओं और पाकिस्तान विभाजन के समय सिख और हिन्दुओं के साथ अत्याचारों की पीड़ा को साझा करते हुए यह फैसला न्यायमूर्ति एसआर सेन ने अमोन राणा की स्थानीय निवास प्रमाणपत्र से सम्बन्धित याचिका का निपटारा करते हुए दिया। फैसले में भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताते हुए कहा गया है कि यह हिन्दू राज का देश था। बाद में मुगल आये फिर अंग्रेज आये। भारत दो राष्ट्र में विभाजित हो गया। पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामिक राष्ट्र घोषित किया और भारत जिसका विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था, उसे भी हिन्दू राष्ट्र घोषित होना चाहिए था; लेकिन वह धर्मनिरपेक्ष देश रहा। आज भी पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी, खासी, जैंता और गारो पर अत्याचार होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिस हिन्दू राष्ट्र का पक्ष निरन्तर युक्तिपूर्वक आज तक रखता रहा, उस पर अब उच्च न्यायालय से भी समर्थन मिल गया।

Nobody should try to make India Islamic country,only Govt. under Modiji will understand: HC judge

Calling the national register of citizens(NRC) updating process in Assam "defective as many foreigners become Indians and original Indians are left out which is very sad". Justice Sudip Ranjan Sen of Meghalaya High Court has said "nobody should try to make india.....another Islamic country otherwise will be a doomsday for India and the world.

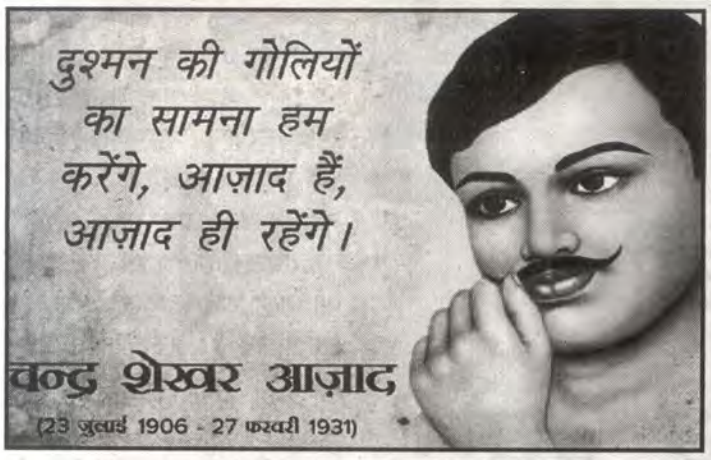

अग्निशलाका पुरुष चन्द्रशेखर आजाद

✍ मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ५५६ देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गांव में पं। सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राहम्ण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं। सीताराम जी तिवारी के यहां २३ जुलाई, १६०६ को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं केअनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गा। ५ वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारंम्भिक शिखा प्रारम्भ हुई। ब्राहम्ण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुच गया। वहां एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया था। यह १५ वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था? काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा–

तुम्हारा क्या नाम है? युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम? 'स्वतंत्र'

तुम्हारे घर का पता? मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को १५ बेतों की सजा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे–इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहां से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि–

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओ के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलकारियों को बहुत ठेस पहुंची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रांतिकारी रामप्रसद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रांतिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है–अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रांतिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रांतिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुंच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं हमारे चरित्र नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पांच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रांतिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रांतिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बंधी बन चुके थे। आजाद जी ने वह रकम क्रांतिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतंत्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–मां के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम' के भाव के अनुसार क्रांतिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां अन्य क्रांतिकारियों के सहयोग से ६ अगस्त १६२५ को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ।प्र।) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रांतिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिसिमल' तथा अशफाक उल्ला खां को फांसी की सजा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रांतिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रांतिकारी युग पुरुष वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रांतिकारी दल को पुर्नगठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनःसंगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगत सिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बंटुकेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रांतिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्तूबर, १६२८ में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नही रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध ा करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आंखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहां यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सौंडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में अलख निरंजन का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

६ अप्रैल, १६२६ ई। को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुंचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसर इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रांतिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरू को २३ मार्च, १६३७ को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांध ी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों शेष पृष्ठ 11 पर

महाशिवरात्रि पर विशेष

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि का प्रारंभ इसी दिन से हुआ। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन सृष्टि का आरम्भ अग्निलिंग (जो महादेव का विशालकाय स्वरूप है) के उदय से हुआ। अधिकतर लोग यह मान्यता रखते है कि इसी दिन भगवान शिव का विवाह देवि पार्वति के साथ हुआ था। साल में होने वाली १२ शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। कश्मीर शैव मत में इस त्यौहार को हर–रात्रि और बोलचाल में हेराथ या हेरथ भी जाता है।

एक बार पार्वती जी ने भगवान शिवशंकर से पूछा, ऐसा कौन–सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत–पूजन है, जिससे मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर लेते हैं? उत्तर में शिवजी ने पार्वती को शिवरात्रि के व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई– एक बार चित्रभानु नामक एक शिकारी था। पशुओं की हत्या करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था। वह एक साहूकार का ऋणी था, लेकिन उसका ऋण समय पर न चुका सका। क्रोधित साहूकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। शिकारी ध्यानमग्न होकर शिव–संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा। चतुर्दशी को उसने शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी। संध्या होते ही साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और ऋण चुकाने के विषय में बात की। शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन देकर बंधन से छूट गया। अपनी दिनचर्या की भांति वह जंगल में शिकार के लिए निकला। लेकिन दिनभर बंदी गृह में रहने के कारण भूख–प्यास से व्याकुल था। शिकार करने के लिए वह एक तालाब के किनारे बेल–वृक्ष पर पड़ाव बनाने लगा। बेल वृक्ष के नीचे शिवलिंग था जो विल्वपत्रों से ढका हुआ था। शिकारी को उसका पता न चला।

पड़ाव बनाते समय उसने जो टहनियां तोड़ीं, वे संयोग से शिवलिंग पर गिरीं। इस प्रकार दिनभर भूखे–प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और शिवलिंग पर बेलपत्र भी चढ़ गए। एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी मृगी तालाब पर पानी पीने पहुंची। शिकारी ने धनुष पर तीर चढ़ाकर ज्यों ही प्रत्यंचा खींची, मृगी बोली, मैं गर्भिणी हूं। शीघ्र ही प्रसव करूंगी। तुम एक साथ दो जीवों की हत्या करोगे, जो ठीक नहीं है। मैं बच्चे को जन्म देकर शीघ्र ही तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो जाऊंगी, तब मार लेना। शिकारी ने प्रत्यंचा ढीली कर दी और मृगी जंगली झाड़ियों में लुप्त हो गई।

कुछ ही देर बाद एक और मृगी उधर से निकली। शिकारी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। समीप आने पर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया। तब उसे देख मृगी ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया, हे पारधी! मैं थोड़ी देर पहले ऋतु से निवृत्त हुई हूं। कामातुर विरहिणी हूं। अपने प्रिय की खोज में भटक रही हूं। मैं अपने पति से मिलकर शीघ्र ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी। शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को खोकर उसका माथा ठनका। वह चिंता में पड़ गया। रात्रि का आखिरी पहर बीत रहा था। तभी एक अन्य मृगी अपने बच्चों के साथ उधर से निकली। शिकारी के लिए यह स्वर्णिम अवसर था। उसने धनुष पर तीर चढ़ाने में देर नहीं लगाई। वह तीर छोड़ने ही वाला था कि मृगी बोली, श्हे पारधी! मैं इन बच्चों को इनके पिता के हवाले करके लौट आऊंगी। इस समय मुझे मत मारो। शिकारी हंसा और बोला, सामने आए शिकार को छोड़ दूं, मैं ऐसा मूर्ख नहीं। इससे पहले मैं दो बार अपना शिकार खो चुका हूं। मेरे बच्चे भूख–प्यास से तड़प रहे होंगे। उत्तर में मृगी ने फिर कहा, जैसे तुम्हें अपने बच्चों की ममता सता रही है, ठीक वैसे ही मुझे भी। इसलिए सिर्फ बच्चों के नाम पर मैं थोड़ी देर के लिए जीवनदान मांग रही हूं। हे पारधी! मेरा विश्वास कर, मैं इन्हें इनके पिता के पास छोड़कर तुरंत लौटने की प्रतिज्ञा करती हूं।

मृगी का दीन स्वर सुनकर शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने शेष पृष्ठ 10 पर

२८ फरवरी पुण्यतिथि पर

एक महान और विनम्र राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

✍ दिव्या आर्य

राजेन्द्र प्रसाद भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति हैं। उनका जीवन हमारा सार्वजनिक इतिहास है। वे सादगी, सेवा, त्याग और देशभक्ति के प्रतिमूर्ति थे। स्वतंत्रता आंदोलन में अपने आपको पूरी तरह से होम कर देने वाले राजेन्द्र बाबू अत्यन्त सरल और गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति थे। वे सभी वर्ग के लोगों से सामान्य व्यवहार रखते थे। लगभग ८० वर्षों के उनके प्रेरक जीवन के साथ–साथ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दूसरे चरण को करीब से जानने का एक बेहतर माध्यम उनकी आत्मकथा है। डॉ. प्रसाद का जन्म ३ दिसम्बर, १८८४ को बिहार के एक छोटे से गाँव में जीरादेई में हुआ था। उनके पूर्वज संयुक्त प्रान्त के अमोढ़ा नाम की जगह से पहले बलिया और फिर बाद में सारन (बिहार) के जीरादेई आकर बसे थे। पिता महादेव सहाय की तीन बेटियाँ और दो बेटे थे, जिनमें से वे सबसे छोटे थे। प्रारंभिक शिक्षा उन्हीं के गाँव जीरादेई में हुई। पढ़ाई की तरफ इनका रुझान बचपन से ही था। १८९६ में जब वे पाँचवी कक्षा में थे, तब बारह वर्ष की उम्र में उनकी शादी राजवंशी देवी से हुई। आगे पढ़ाई के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में आवेदन पत्र डाला जहाँ उनका दाखिला हो गया और ३० रुपए महीने की छात्रवृत्ति मिलने लगी। उनके गाँव से पहली बार किसी युवक ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में सफलता प्राप्त की थी। जो निश्चित ही राजेन्द्र प्रसाद और उनके परिवार के लिए गर्व की बात थी। डिग्री पूरी की जिसके लिए उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। इसके बाद पटना आकर वकालत करने लगे जिससे इन्हें बहुत धन और नाम मिला। बिहार में अंग्रेज सरकार के नील के खेत थे। सरकार अपने मजदूर को

उचित वेतन नहीं देती थी। १९१७ में गाँधी जी ने बिहार आकर इस समस्या को दूर करने की पहल की। उसी दौरान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से मिले और उनकी विचारधारा से प्रभावित हुए। १९१९ में पूरे भारत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन की लहर थी। गाँधी जी ने सभी स्कूल, सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने की अपील की। जिसके बाद डॉ. प्रसाद ने अपनी नौकरी छोड़ दी। चम्पारण आन्दोलन के दौरान राजेन्द्र प्रसाद गाँधी जी के वफादार साथी बन गए थे। गाँधी जी के प्रभाव में आने के बाद उन्होंने अपने पुराने और रूढ़िवादी विचारधारा का त्याग कर दिया और एक नई ऊर्जा के साथ आन्दोलन में भाग लिया। १९३१ में कांग्रेस ने आन्दोलन छेड़ दिया। इस दौरान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को कई बार जेल जाना पड़ा। १९३४ में उनको बम्बई कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। वे एक से अधिक बार अध्यक्ष बनाए गए। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। इस दौरान वे गिरफ्तार हुए और नजरबन्द कर दिए गए। भले ही, १५ अगस्त, १९४७ को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई लेकिन संविधान सभा का गठन उससे कुछ समय पहले ही कर लिया गया था जिसके अध्यक्ष डॉ. प्रसाद चुने गए थे। संविधान पर हस्ताक्षर करके डॉ. प्रसाद ने ही इसे मान्यता दी। भारत के राष्ट्रपति बनने से पहले वे एक मेधावी छात्र, जाने–माने वकील, आन्दोलनकारी, सम्पादक, राष्ट्रीय नेता, तीन बार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, भारत के खाद्य एवं कृषि मंत्री और संविधान सभा के अध्यक्ष रह चुके थे। २६ जनवरी, १९५० को भारत को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के रूप में प्रथम राष्ट्रपति मिल गया। १९६२ में ही अपने पद को त्याग कर वे पटना चले गए और जन सेवा कर जीवन व्यतीत करने लगे। १९६२ में अपनी राजनैतिक और सामाजिक योगदान के लिए उन्हें भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से नवाजा गया। २८ फरवरी, १९६३ में डॉ. प्रसाद का निधन हो गया। उनके जीवन से जुड़ी कई ऐसी घटनाएँ हैं, जो यह प्रमाणित करती हैं कि राजेन्द्र प्रसाद बड़े दयालु और निर्मल स्वभाव के व्यक्ति थे। भारतीय राजनैतिक इतिहास में उनकी छवि एक महान और विनम्र राष्ट्रपति की है। १९२१ से १९४६ के दौरान राजनीतिक सक्रियता के दिनों में राजेन्द्र प्रसाद पटना स्थित बिहार विद्यापीठ भवन में रहे थे। मरणोपरान्त उसे "राजेन्द्र प्रसाद संग्रहालय" बना दिया गया।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

हिन्दू महासभा नेत्री डॉ० पूजा शकुन पान्डे की जेल से रिहाई पर जोरदार स्वागत

कुछ दिन पूर्व अलीगढ़ में गांधी वध का नाट्य रूपान्तरण करने के आरोप में जेल में बंद अखिल भारत हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय सचिव डॉ० पूजा शकुन पान्डे की अलीगढ़ कारागार से रिहाई पर अखिल भारत हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओं व हिन्दू समर्थकों ने जमकर स्वागत किया। साथ ही उत्तर प्रदेश पुलिस पर भेदभाव का आरोप लगाते हुए कहा कि अब तक हजारों लोग किसी न किसी घटना का नाट्य रूपान्तरण करते रहे हैं लेकिन किसी के विरुद्ध कभी कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिससे हिन्दू समर्थकों में बड़ा रोष है। डॉ० पान्डे ने ऐसा गलत कार्य नहीं किया था जिसके लिए उनके साथ यह अनुचित व्यवहार किया गया। उत्तर प्रदेश पुलिस के इस कायराना कृत्य की अखिल भारत हिन्दू महासभा ने जमकर भर्त्सना की है और डॉ० पूजा शकुन पान्डे की रिहाई का स्वागत किया है।

शेष पृष्ठ 1 का

पाकिस्तानी कलाकारों पर भारत.....

प्रतिबंधित कर दिया जाए। उल्लेखनीय है कि सिने वर्क्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी रौनक सुरेश जैन की ओर से जारी नोटिस में कहा गया है, एसोसिएशन, जम्मू–कश्मीर के पुलवामा जिले में हमारे जवानों पर हुए हमले की कड़ी निंदा करता है। पीड़ित परिवारों के साथ हमारी संवेदना है। ऐसे आतंक के खिलाफ एसोसिएशन राष्ट्र के साथ है। हम आधिकारिक रूप पाकिस्तानी कलाकारों को बैन करने की घोषणा करते हैं। फिर भी अगर कोई ऑर्गनाइजेशन पाक कलाकारों के साथ काम करने पर जोर देता है तो उसे एसोसिएशन द्वारा बैन कर दिया जाएगा। साथ ही उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। देश सबसे पहले आता है, हम देश की संप्रभुता के साथ खड़े हैं। जम्मू–कश्मीर के पुलवामा में हुए आतंकी हमले में देश के अलग–अलग हिस्सों के कई जवान शहीद हो गए हैं। इसे लेकर पूरे देश में सदमे और गुस्से का माहौल है।

शेष पृष्ठ 1 का

कुंभ मेले में दिख रहा हिन्दू.....

प्रशासन को उन्हें मंजूरी देनी पड़ी। मेले में सरकारी व्यवस्था तो बेहतर दिख ही रही है, साथ–साथ कुछ और भी खास है। बता दें कि कुंभ मेले का सबसे आलीशान टेंट प्रति रात्रि ३५००० रुपये का है। यह पांच सितारा होटल जैसा है। ये टेंट ६०० वर्ग फुट क्षेत्रफल में बना है। इसमें दो बेडरूम, एक लिविंग रूम, फर्निचर, बेड, प्राइवेट वाशरूम और एलईडी टीवी के साथ गृहस्थी का सारा सामान भी है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि कुम्भ मेला विश्व का सबसे बड़ा समागम है। यह आध्यामिकता का सबसे बड़ा मेला है।

शेष पृष्ठ 4 का

बुलेटप्रूफ जैकेट कैसे बनती.....

है कि इनको जरूरत के अनुसार अलग–अलग हिस्सों में बांटा जा सकता है जैसे केवल गश्त ड्यूटी में इसके पीछे वाले हिस्से को हटाया जा सकता है और केवल अगले हिस्से को ही पहना जा सकता है। इसी तरह इसके साथ हेल्मेट, गर्दन, कोहनी और कमर के टुकड़ों को अलग किया जा सकता है। इनमें विशेष किस्म की नवीनतम सामग्री लगाई गई है। भारत में बनने वाली सॉलिड बुलेटप्रूफ जैकेट १०० से ज्यादा देशों की सेनाओं द्वारा इस्तेमाल की जा रही हैं जिनमें कुछ बड़े नाम हैं: ब्रिटेन, जर्मनी, स्पेन और फ्रांस आदि। भारत में दिल्ली से सटा हुआ फरीदाबाद क्षेत्र इस दिशा में बहुत ही तरक्की कर रहा है और यहाँ पर बड़ी मात्रा में बुलेटप्रूफ जैकेटों का उत्पादन किया जा रहा है।

शेष पृष्ठ 9 का

महाशिवरात्रि पर.....

उस मृगी को भी जाने दिया। शिकार के अभाव में बेल–वृक्षपर बैठा शिकारी बेलपत्र तोड़–तोड़कर नीचे फेंकता जा रहा था। पौ फटने को हुई तो एक हृष्ट–पुष्ट मृग उसी रास्ते पर आया। शिकारी ने सोच लिया कि इसका शिकार वह अवश्य करेगा। शिकारी की तनी प्रत्यंचा देखकर मृगविनीत स्वर में बोला, हे पारधी भाई! यदि तुमने मुझसे पूर्व आने वाली तीन मृगियों तथा छोटे–छोटे बच्चों को मार डाला है, तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि मुझे उनके वियोग में एक क्षण भी दुःख न सहना पड़े। मैं उन मृगियों का पति हूं। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा।

मृग की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटनाचक्र घूम गया, उसने सारी कथा मृग को सुना दी। तब मृग ने कहा, श्मेरी तीनों पत्नियां जिस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई हैं, मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएंगी। अतः जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ा है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने शीघ्र ही उपस्थित होता हूं। उपवास, रात्रि–जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। उसमें भगवद् शक्ति का वास हो गया था। धनुष तथा बाण उसके हाथ से सहज ही छूट गया। भगवान शिव की अनुकंपा से उसका हिंसक हृदय कारुणिक भावों से भर गया। वह अपने अतीत के कर्मो को याद करके पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगा। थोड़ी ही देर बाद वह मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसके नेत्रों से आंसुओं की झड़ी लग गई। उस मृग परिवार को न मारकर शिकारी ने अपने कठोर हृदय को जीव हिंसा से हटा सदा के लिए कोमल एवं दयालु बना लिया। देवलोक से समस्त देव समाज भी इस घटना को देख रहे थे। घटना की परिणति होते ही देवी–देवताओं ने पुष्प–वर्षा की। तब शिकारी तथा मृग परिवार मोक्ष को प्राप्त हुए।

अनुष्ठान : गेंदे के फूलों की अनेक प्रकार की मालायें जो शिव को चढ़ाई जाती हैं। इस अवसर पर भगवान शिव का अभिषेक अनेकों प्रकार से किया जाता है। जलाभिषेक जल से और दुग्ध्धाभिषेक दूध से। बहुत जल्दी सुबह–सुबह भगवान शिव के मंदिरों पर भक्तों, जवान और बूढ़ों का ताँता लग जाता है वे सभी पारंपरिक शिवलिंग पूजा करने के लिए आते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं। भक्त सूर्योदय के समय पवित्र स्थानों पर स्नान करते हैं जैसे गंगा, या (खजुराहो के शिव सागर में) या किसी अन्य पवित्र जल स्रोत में। यह शुद्धि के अनुष्ठान हैं, जो सभी हिंदू त्योहारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। पवित्र स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र पहने जाते हैं, भक्त शिवलिंग स्नान करने के लिए मंदिर में पानी का बर्तन ले जाते हैं महिलाओं और पुरुषों दोनों सूर्य, विष्णु और शिव की प्रार्थना करते हैं मंदिरों में घंटी और शंकर जी की जय ध्वनि गूंजती है। भक्त शिवलिंग की तीन या सात बार परिक्रमा करते हैं और फिर शिवलिंग पर पानी या दूध भी डालते हैं। शिव पुराण के अनुसार, महाशिवरात्रि पूजा में छह वस्तुओं को अवश्य शामिल करना चाहिए।

- ❖ शिव लिंग का पानी, दूध और शहद के साथ अभिषेक। बेर या बेल के पत्ते जो आत्मा की शुद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ❖ सिंदूर का पेस्ट स्नान के बाद शिव लिंग को लगाया जाता है। यह पुण्य का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ फल, जो दीर्घायु और इच्छाओं की संतुष्टि को दर्शाते हैं।
- ❖ जलती धूप, धन, उपज (अनाज)
- ❖ दीपक जो ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुकूल है।
- ❖ पान के पत्ते जो सांसारिक सुखों के साथ संतोष अंकन करते हैं।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 5 का

परशुराम भगवान विष्णु के.....

दिया। तब सहस्त्रर्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोध स्वरूप परशुराम की अनपस्थिति में उनके ध्यानस्थ पितज्ञ जमदग्नि की हत्या कर दी। रेणुका पति की चिताग्नि में प्रविष्ट हो सती हो गई। इस कांड से कुपित परशुराम ने पूरे वेग से महिष्मती नगरी पर आक्रमण कर दिया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने एक के बाद एक पूरे इक्कीस बार इस पृथ्वी से भारतीय राजाओं का विनाश किया। यही नहीं उन्होंने है वंशी राजाओं का विनाश किया। यही नही उन्हांने है वंशी राजाओं के रक्त से स्थलत पंचक क्षेत्र के पांच सरोवर भर दिए और पिता का श्राद्ध सहस्त्रर्जुन के पुत्रों के रक्त से किया। अन्त में महर्षि ऋषि चीक ने प्रकट होकर परशुराम को ऐसा घोर कृत्य करने से रोका। इसके पश्चात उन्होंने अश्वमेघ महायज्ञ किया और सत्पद्वीप युक्त पृथ्वी महर्षि कश्यप को दान कर दी। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने देवराज इन्द्र के समक्ष अपने शस्त्र त्याग दिए और सागर द्वारा उच्छिष्ट भूभाग महेन्द्र पर्वत पर आश्रम बनाकर रहने लगे।

शेष पृष्ठ 7 का

अपनी भाषा और संस्कृति.....

समर्थ होंगे और विश्व में सम्मान प्राप्त कर सकेंगे। इतिहास और वर्त्तमान, देश और दुनिया को ध्यान से देख कर यह भ्रान्ति दूर हो सकती है। मनुष्य जीवन में आजीविका के अतिरिक्त अनेक विषय महत्त्वपूर्ण हैं। वस्तुतः सांस्कृतिक, सामाजिक, चारित्रिक दृष्टि के बिना जीविका सम्बन्धी विषय भी ठीक से नहीं समझे जा सकते; लेकिन दुर्भाग्यवश अपने देश में एक पूरा राजनीतिक –वैचारिक उद्योग खड़ा हो गया है, जो हमारी भाषा–संस्कृति को छिन्न–भिन्न करने में लगा हुआ है। इसी से बाधा खड़ी होती है।

संस्कृत की चर्चा को सदैव भाजपा से जोड़कर एक वितृष्णा भी पैदा की जाती है। इसमें देसी–विदेशी मीडिया के प्रभावशाली हिस्से विशेष भूमिका निभाते हैं। वे हमारे भाषायी भेदों को उभार कर जानबूझकर भावनात्मक उत्तेजना पैदा करते हैं ताकि इसी बहाने विमर्श को हिन्दू–विरोधी तेवर दिया जा सके। इस तरह एक तीर से दो शिकार करने की कोशिश होती है। संस्कृत पर देश में कोई विवाद न होने पर भी कृत्रिम 'विवाद' खड़ा किया जाता है। साथ ही मामले का राजनीतिकरण कर लोगों को उकसाया जाता है ताकि लोग इसे भाजपा की चालबाजी समझ कर संस्कृत का विरोध करने खड़े हो जायें। इस हिन्दू–विरोधी पूर्वाग्रह का सम्बन्ध भाषा से नहीं है। इसलिए इसका समाधान करना भी आवश्यक है ताकि हम भारत के लोग मिल–जुलकर अपनी भाषा, संस्कृति और साहित्य की चिन्ता कर सकें।

शेष पृष्ठ 6 का

हे भगवान! यह क्या.....

भूखमरी बढ़ती जा रही है, पीने का पानी कम होता जा रहा है। परमात्मा ने जिस तरह यह सृष्टि दी थी वह सुंदर, मनमोहक, स्वर्गतुल्य थी जिसे हम संभाल नहीं सके। ग्लोबल वॉर्मिंग ने मौसम को प्रभावित किया है। जब आज की इस दुनिया में स्थिति इस कदर बिगड़ गई है कि कमजोर को तगड़ी मार पड़ रही है, छोटे बड़ों पर हावी हो रहे हैं, पति–पत्नी में कुत्ते बिल्ली का वैर है, औलाद बिगड़ैल है, शासक अक्ल का अंधा है, प्रजा बात बात बगावत पर उतारु हो जाती है, लोग बेईमान, कपटी, कामचोर, भ्रष्ट, कामुक है, हिंसा का दौर चल रहा है। आपस में प्रेम प्यार तो है नहीं। बलात्कार/ गैंगरेप की घटनायें रही हैं। हां वैर, ईर्ष्या, तकरार बढ़ें हैं, हर शख्स तनाव ग्रस्त है, ऐसे में मैं परमात्मा से पूछता हूं, हे भगवन! यह क्या हो रहा है? कब तक चलता रहेगा? आपके द्वारा अवतार लेकर दुनिया में सुधार लाने के लिये आपकी कब तक इन्तजार करनी पड़ेगी? कहते हैं कि आप काले घोड़े पर सवार होकर कलि का अवतार लोगे? तो ईश्वर जल्दी इस दुनिया में अपने प्रकाशपुंज स्वरूप में अवतार लो।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 12 का

दिल्ली सहित देश भर में तबाही.....

होगा कि संस्कृत और अपनी भाषाओं के सहारे ही हम वास्तव में एजेंसियों ने १७ स्थानों पर छापे मार कर १० आरोपियों को हिरासत में लिया है। जिन स्थानों पर छापे मारे गये, उनमें मुख्य हैं दिल्ली के जफराबाद, सीलमपुर, अमरोहा, मेरठ, हापुड़, गाजियाबाद और लखनऊ। ये षड्यन्त्र 'हरकत–उल–हर्ब–एइस्लाम' संज्ञक संस्था के अन्तर्गत पनप रहे थे, जिसका संचालन विदेश में बैठे सरगना कर रहे थे। इसका मुखिया (मास्टर माइण्ड) दिल्ली का मौलाना–मुफ्ती मो. सुहेल है। अमरोहा का मदरसा इसका प्रमुख केन्द्र था। रा.सु. एजेन्सी के वरिष्ठ अधिकारी श्री मित्तल के अनुसार यह माड्यूल फिदायीन और रिमोट कंट्रोल से बड़े पैमाने पर विस्फोट करने के लिए पूरी तरह तैयार था। इसके पास बरामद विस्फोटक साजो–सामान इसका प्रमाण है। प्राप्त तीन लैपटाप भी इसकी पुष्टि करते हैं। छापों में २५ किलोग्राम पोटेशियम नाइट्रेट, अमोनियम नाइट्रेट, सल्फर, सुगर, ११२ अलार्म घड़ियाँ, मोबाइल फोन सर्किट, ५१ पाइप, कार का रिमोट कंट्रोल, वायरलेस डोरवेल स्विच, स्टील कण्टेनर, तार, बहुसंख्यक मोबाइल फोन, १३४ सिमकार्ड तथा साढ़े सात लाख रुपये नकद प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त राकेट लांचर भी है। गुप्तचर–सेवाओं के अनुसारी पश्चिमी उत्तर प्रदेश सदैव आतंकी गतिविधियों का विशेष केन्द्र रहा है। हिरासत में लिये गये लोगों में लखनऊ की एक महिला भी है, जिसने कुछ आरोपियां द्वारा चुराये गये जेवर–आभूषण बिकवाकर इस आतंकी गिरोह की सहायता की है। सभी आरोपित मुख्यतः बीस से तीस वर्षीय युवक हैं। इनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है– मुफ्ती मोहम्मद सुहेल (२६ वर्ष), अनस यूनुस (२४ वर्ष एमिटी यूनि. में सिविल इंजीनियरिंग का छात्र, नोयडा), राशिद जफर रक उर्फ जफर (२३ वर्ष, जफराबाद में सिले कपड़ों की दूकान का मालिक), सईद (२८ वर्ष, अमरोहा में वेल्डर), रईस अहमद (सईद का भाई, वेल्डर), जुबेर मलिक (२० वर्ष, जफराबाद, बी, ए. तृतीय वर्ष का छात्र), जैद मलिक (जुबेर का बड़ा भाई, २२ वर्ष) साकिब इफ्तेखार (२६ वर्ष, हापुड़ में इमाम), मो. इरशाद (आटोरिक्शा चालाक, अमरोहा) तथा मो. आजम (३५ वर्ष, दिल्ली में मेडिकल स्टोर का मालिक)। एन.आई.ए. सूत्रों के अनुसार सईद और रईस ने भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री इकट्ठी की थी, जिससे इंटेसिव एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED) तैयार की जानी थी। ये ही दोनों राकेट लांचर के निर्माता थे। इनके अतिरिक्त षड्यन्त्र में लिप्त अन्य भागीदारों से पूछताँछ की जा रही है।

शेष पृष्ठ 8 का

अग्निशलाका पुरुष .....

को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर २२ मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रांतिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया। दल का धन व्यापारी के यहां रखा गय था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहां मिलेंगें। बम, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुंच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फ़िर क्या था, धायं–धायं कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनी पिस्तौल में अंतिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अंतिम गोली अपनी कपनटी में मार ली। यह दुभाग्यपूर्ण दिवस २७ फरवरी, १९३१ का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उने मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई। जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएं हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

बेटियों के साथ अनन्त अमानुषिकता की पराकाष्ठा

एक ओर प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का अभियान चला रहे हैं। दूसरी ओर उनके साथ अमानुषिक व्यवहार पराकाष्ठा को भी पार कर गया है। अल्पवयस्क बालिकाओं के साथ आये दिन हो रही बलात्कार और तदनन्तर उनकी हत्या की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। 'मीर'– संवाद–श्रृंखला में उत्पीड़ित कतिपय–महिलाओं ने जब यौवन अथवा कैशोरकाल में अपने साथ हुए अश्लील कृत्यों का उद्घाटन किया, तो समाज में बहुसंख्यक प्रतिष्ठित व्यक्तियों की भी घृणित प्रवृत्तियाँ उजागर हो गयीं। इन अमानवीय कुकृत्यों को रोकने के लिए अनेक कठोर कानून भी बन गये, लेकिन इनमें न्यूनता के कोई लक्षण परिलक्षित नहीं हो रहे हैं। इधर एक सप्ताह में ही दो ऐसी घटनाएँ सामने आयीं, जिन्होंने एक बार पुनः प्रबुद्ध वर्ग को झकझोर दिया है। इनमें से पहली है कि एक किशोरी को, स्कूल से लौटते या जाते समय पेट्रोल डालकर जीवित जला देने की। इस अमानुषिक कुकृत्य को करने वाला स्वयं उस किशोरी के ताऊ का पुत्र है, जिसने स्वयं भी बाद में आत्महत्या कर ली।

दूसरी घटना है एक माँ के द्वारा अपनी ही दुधमुँही बच्ची की गला घोटकर या श्वासावरोधपूर्वक की गयी हत्या। हत्या करने के बाद इस माँ ने अपने पति से कहा 'अब तो तुम्हारा टेंशन खत्म हो गया न?' इससे पति–पत्नी के मध्य नवजात कन्या के कारण विवाद की स्थिति स्वतः प्रकट हो जाती है। कन्या को जन्म देने के कारण आये दिन परिवार में दिये जाने वाले तानों और उलाहनों से माँ इतने तनाव में आ गयी कि उसका मानसिक सन्तुलन जाता रहा और उसके हाथों अपनी ही कोखजाई, अबोध कन्या के प्रति यह निर्मम और अमानुषिक कुकृत्य हो गया। **'अमानुष बनाकर छोड़ा'** किसी फिल्म का यह गीत ऐसे ही प्रसंगों पर चरितार्थ होता है। भारतीय समाज में कन्या के जन्म को लेकर अन्ततः इतनी तिरस्कारपूर्ण प्रवृत्ति क्यों दिखाई देती है? संस्कृत के एक कवि ने कदाचित पुत्री–जन्मजन्य इस दुःस्थिति को 'पुत्रीति जाता, महतीति चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः (पुत्री पैदा हुई, परिवार में चिन्ता हो गयी कि इसे कैसे किसे ब्याहना है?) कहकर व्यक्त किया था। कृषि प्रधान देश में, एक परिश्रमी कार्मिक के रूप में पुत्र के प्रति विशेष आकर्षण स्वाभाविक है, लेकिन 'पुत्र' की जो यह व्युत्पत्ति परम्परा से प्राप्त होती है कि 'पुम्' नामक नरक से पिता को जो बचाये, वह पुत्र है। –पुम् नाम नरकात् त्रायते इति पुत्रः', यह भ्रामक ही प्रतीत होती है। कब किसने इस 'पुम्' नामक नरक को देखा? कहाँ है यह? फिर स्वर्ग और नरक में तो व्यक्ति अपने कर्मों से जाता है– उसमें न पुत्र सहायक हो सकता है और न पुत्री ही। इसी प्रकार 'दुहिता' पर्याय की यह व्युत्पत्ति कि दुहिता वही है, जो दूर रहे। **'दुहिता-दूरे हिता'** वह भी अनुचित ही है। वास्तव में पुत्री के विवाह में, पारम्परिक दहेज की व्यवस्था कदाचित् इसलिए कि गयी थी कि पिता की कृषि सम्पत्ति में विभाजन न हो। पुत्री को उसका प्राप्य विवाह के समय ही दे दिया जाये, जिससे अपने मातृपक्ष से उसके मधुर सम्बन्ध बने रहें। अपनी ससुराल से बार–बार मायके आकर वह कृषि करा भी नहीं सकती थी। यह दहेज वास्तव में पुत्री को प्राप्य दायाद्य था, जिसका कालान्तर से दुरुपयोग होता गया। अब समय आ गया है कि पुत्री के प्रति सद्भावना के संवर्द्धन–हेतु केवल कानून पर भरोसा ने करके, समाज का मन बदला जाये, जिससे ऐसी अमानुषिक घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

दिल्ली सहित देश भर में तबाही ढाने के भयावह आतंकी षड्यन्त्र का भण्डाफोड़

सन् २०१८ की समाप्ति से छह दिन पूर्व, २६ दिसम्बर (बुधवार) को राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी ने बगदादी की आई. एस.आई.एस. की तर्ज पर राष्ट्रीय राजधानी और उ. प्र. के अनेक जनपदों में सक्रिय ऐसे भयानक इस्लामी षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ किया है, जो भारी आतंकी तबाही मचाने के लिए सन्नद्ध था। यह भारी आतंकी षड्यन्त्र तब विदित हुआ है, जब देश गणतन्त्र–दिवस की तैयारी कर रहा है। रा. सु.ए. (N.I.A) और ए.टी.एस. दोनों बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने २६ जनवरी, के उत्सव से पूर्व इस षडयन्त्र को उद्घाटित कर सम्भावित भयावह विनाश से देश को बचाने का अति प्रशंसनीय साहस किया है। इसका आई.एस. आई.एस. के नये मापक (माड्यूल) के रूप में आकलन किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार रा.स्व. संघ के कार्यालय और पुलिस के मुख्यालय इसके विशेष निशाने पर थे। सुरक्षा शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

अलगाववादियों पर और सख्त होने की आवश्यकता

पाकिस्तान के तलवे चाटने वाले भारतीयता के दुश्मन अलगाववादी हुर्रियत नेताओं से सुरक्षा एवं अन्य सरकारी सुविधाएं वापस लेने का फैसला एक सही कदम है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है, उन्हें जेलों में बंद कर उनके साथ बर्बरता से पेश आने की जरूरत है। सवाल यह है कि अलगाव के साथ आतंक के समर्थक इन तथाकथित कश्मीरी नेताओं को सुरक्षा दी ही क्यों गई थी? क्या यह विचित्र नहीं कि एक ओर देश के खिलाफ बयानबाजी या नारेबाजी करने अथवा सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणियां लिखने पर तो देशद्रोह का मामला दर्ज हो जाता है, लेकिन पाकिस्तान के इशारे पर भारत के खिलाफ लगातार जहर उगलने, मजहबी उन्माद फैलाने, पत्थरबाजों के गिरोहों को पालने और आतंकियों का गुणगान करने वाले हुर्रियत नेता बरसों से सरकारी सुरक्षा पर पल रहे थे। यह उदारता नहीं, एक तरह की नीतिगत जड़ता थी। हैरानी की बात है कि इसके पहले किसी ने यह क्यों नहीं सोचा कि कश्मीर के माहौल को विषाक्त करने वाले इन तत्वों को सुरक्षा के साये में रखना एक प्रकार से सांपों को दूध पिलाना है? आखिर किस आधार पर इनसे यह उम्मीद की जा रही थी कि ये कश्मीर समस्या के समाधान में सहायक बन सकते हैं? वास्तव में कश्मीर में सुरक्षा की आवश्यकता तो भारत समर्थक कश्मीरियों को है। चूंकि कश्मीर में अलगाववाद और आतंकवाद पनपा ही इसलिए कि उसे धारा ३७० के तहत कहीं अधिक अधिकार प्राप्त हैं, इसलिए यह सही समय है जब इस धारा को खत्म करने पर विचार किया जाना चाहिए। यह धारा कश्मीर घाटी और शेष भारत के बीच एक खाई की तरह है। इसीलिए कश्मीरियों का एक तबका खुद को भारत से अलग मानता है। इसी मान्यता न घाटी में अलगाव के बीज बोए। जैसे पाकिस्तान को दिए गए सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र के दर्जे को वापस लेने में देर हुई, वैसे ही अलगाववादी नेताओं से सुरक्षा वापस लेने में भी देर हुई। धारा ३७० खत्म करने में देर न की जाए। इसी के साथ यह भी समझा जाना चाहिए कि आबादी के असंतुलन ने वहां के हालात और बिगाड़े हैं। यह अच्छा नहीं हुआ कि बीते ५५ महीनों में कश्मीरी पंडितों को उनके घरों में फिर से बसाने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं हो सकी। यह पहल केवल इसलिए नाकाम नहीं हुई कि अलगाववादी बाधक बन गए थे। यह इसलिए भी नाकाम हुई, क्योंकि पीडीपी और नेशनल कांफ्रेंस सरीखे दल भी हुर्रियत जैसी भाषा बोलने लगे थे। साफ है कि कश्मीर में कुछ और कदम भी उठाने होंगे। इस क्रम में पत्थरबाजों के अन्य आकाओं पर भी सख्ती करनी होगी।चूंकि यह समय छिटपुट नहीं, बल्कि कश्मीर घाटी को मुख्यधारा में लाने वाले निर्णायक फैसलों का है इसलिए उसी दिशा में तेजी से बढ़ना चाहिए। इसके साथ ही जो कुछ अलगाववादी विचारधारा के लोग कश्मीर में हैं उन्हें चिन्हित कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 27 फरवरी से 05 मार्च 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल [illegible] दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 0[illegible]
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasa[illegible]
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।